7-3

वर्ष-चन्द्र-प्रकाश

पं० चन्द्रदत्त पन्त

मोतीलाल बनारसीदास
दिल्ली :: पटना :: वाराणसी



वर्ष-चन्द्र-प्रकाश

चन्द्रदत्त पन्त
नई दिल्ली

मोतीलाल बनारसीदास
दिल्ली :: वाराणसी :: पटना

प्रधान कार्यालय : बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-७
शाखाएँ : (१) चौक, वाराणसी (उ० प्र०)
(२) अशोक राजपथ, पटना (बिहार)

द्वितीय संस्करण : १९७१

मूल्य : २.००

सुन्दरलाल जैन, मोतीलाल बनारसीदास, बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली-७
द्वारा प्रकाशित तथा शान्तिलाल जैन, जैनेन्द्र प्रेस, बंगलो रोड,
जवाहर नगर, दिल्ली-७ द्वारा मुद्रित।

विषय-सूची

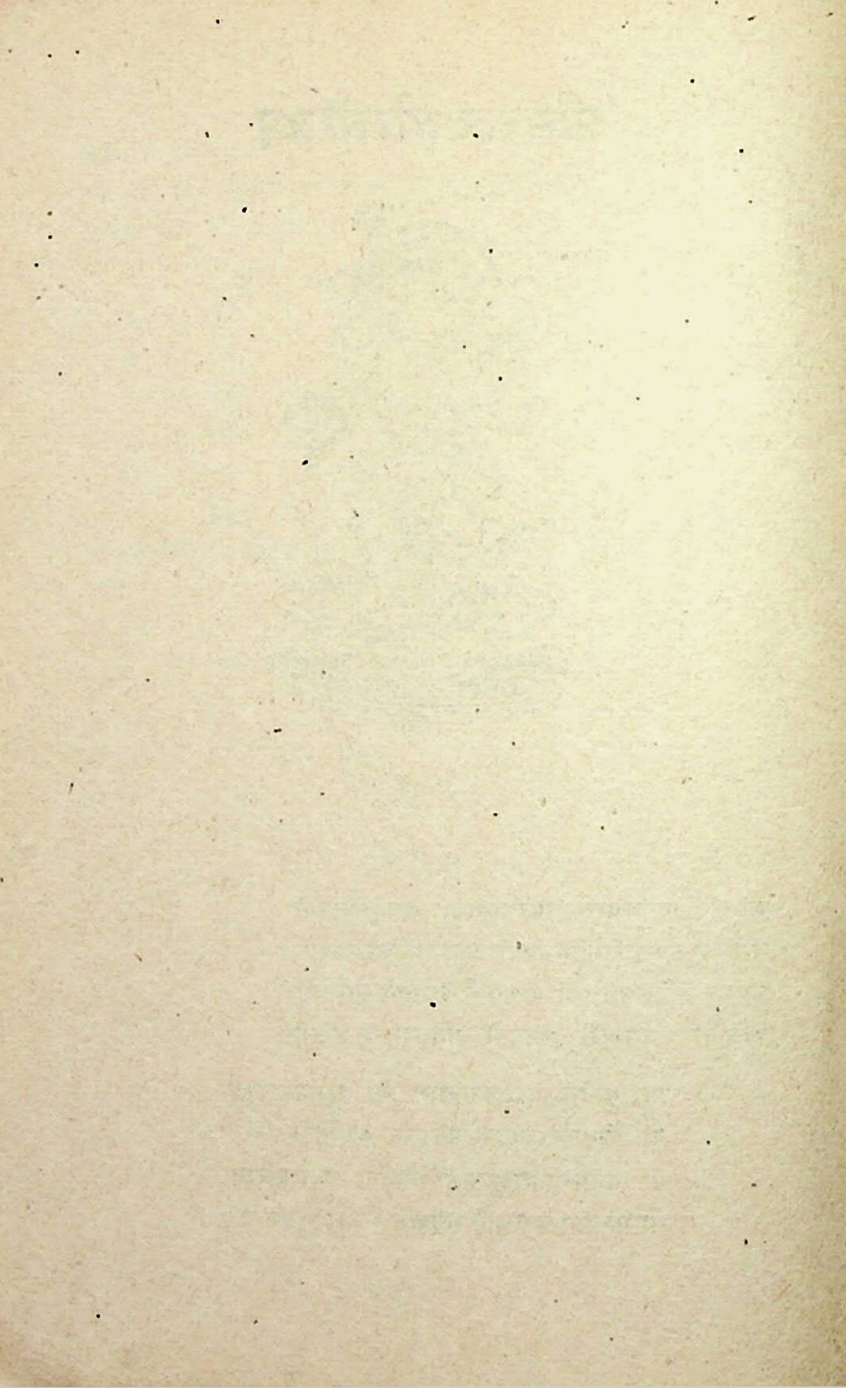
श्रीसरस्वतीस्तोत्रम्



* ॐ *

शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ।
हस्ते स्फाटिकमालिकां च दधतीं पद्मासने संस्थितां
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना ।
या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ॥



वर्ष-चन्द्र-प्रकाश

वर्ष फल

वर्ष वनानेवाले मनुष्य के लिये, जन्मपत्र में आये गणित ग्रह, नक्षत्र, ऊँच-नीच आदि का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है, क्योंकि विना उसके आये वर्षफल वनाना व्यर्थ सा ही है। क्योंकि वर्षफल तो जन्मपत्र का एक छोटा सा अंग है जो कि जन्मपत्र की दशान्तर्दशा के शुभाशुभ परिणाम को मासादि में प्रत्यक्ष रूप से प्रकट करता है। इसलिये वर्षफल का जन्मपत्र के साथ बड़ा ही घनिष्ठ सम्वन्ध है। ज्योतिषप्रेमियों तथा ज्योतिष पर विश्वास रखनेवाले मनुष्यों के लिये यह अत्यन्त आवश्यक हो जाता है कि पूर्ण रूप से जन्मपत्र के वने रहने पर भी सदैव वर्षफल किसी अच्छे विद्वान् ज्योतिषी से बनवाकर प्रत्येक वर्ष के शुभाशुभ फल को मासिक ग्रहदशा परिणाम से तुलना करके अपने जन्मपत्र में दी गई ग्रहदशा के वार्षिक परिणाम को यथेष्ट रूप से अनुभव करते रहना चाहिये। क्योंकि जन्मपत्र की ग्रहदशायें मनुष्य की वर्षोपरि वर्षपर्यन्त दशाफल को विदित करती हैं, किन्तु वर्षफल की दशायें मासपर्यन्त ग्रह दशा के शुभाशुभ फल को यथेष्ट रूप से उजागर करके मनुष्य में आशातीत उत्साह भरकर नव-जीवन का संचार करती है। इसलिये इस अनिश्चित जीवन में क्षणिक निश्चिन्तता प्राप्त करने के लिये मनुष्य को वर्षफल बनवाने की आवश्यकता प्रतीत होती है।

यद्यपि आधुनिक पंचांगों में ध्रुवक आदि बनाकर नवीन ज्योतिषियों के लिये गणित का समस्त कार्य सुलभ कर दिया गया है, फिर भी आवश्यकता-नुसार ज्योतिष का कार्य करनेवाले प्रत्येक मनुष्य को ध्रुवक बनाना अवश्य ही

आना चाहिये। जिसके बनाने की सरल रीति पाठकों के ज्ञान के लिये इस प्रकार निम्नांकित की जाती है।

ध्रुवक बनाने की रीति

गताब्दवृन्दैः मुनिवामचन्द्रः निघ्नं नभोव्योमगजाश्च भक्ताः।
तृदा फलं वार-घटी-पलानि स्वजन्म वारा युतितानि तानि॥

गत वर्षों को १००७ से गुणा करके गुणनफल को ८०० से भाग दे, जो शेष रहे उसे ६० से गुणा करके गुणनफल को ८०० से भाग दे और शेष को फिर ६० से गुणा करके ८०० का भाग दे। यदि शेष ४०० या शून्य (०) बचे तो समझो कि ध्रुवक ठीक है। अन्यथा कहीं-न-कहीं त्रुटि अवश्य ही रह गई हैं। लब्धि को क्रमशः रख लेने पर यथेष्ट वर्ष का ध्रुवक बन जाता है। इस ध्रुवक के दिन-घड़ी-पलादि को जन्म के वार इष्ट काल घड़ी पल में जोड़ देने से वर्ष का वार तथा इष्ट काल निकल आता है। वर्ष का वार जन्म के वार से प्रविष्ठा में एक दिन आगे-पीछे भी निकलता है।

वर्ष सवाया अर्ध करि पुनि ड्योढ़ा करि देय।
वार घटी पल जोड़ के वर्ष ध्रुवा कहि देय॥

गत वर्षों को २१ से गुणा करके ४० से भाग देकर भी घड़ी पल निकल आते हैं। इस प्रकार आये ध्रुवक को जन्म के वार इष्ट काल में जोड़ने से वर्ष का वार तथा इष्ट काल निकल आता है।

—वर्षेष्ट ध्रुवांक सारणी—

वर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	७	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	७	१	२	४
घटी	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५	५०	६	२१	३७	५२	८	२३	३९	४	१०
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	७	२	३	४	५	७	१	२	४	५	६	७	२	३	४	५	७	१
घटी	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५	१	१६	३२	४७	३	१८	३४	४१	५	२१
पल	१	३३	४	३६	७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	२०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	७	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	७	१	३	४	५
घटी	३६	५२	७	२३	३८	५४	९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	०	१५	३१
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	१	२	३	४	६	७	१	२	४	५	६	७	.	३	४	५	७	१	२
घटी	४७	२	१८	३३	४९	४	२०	३५	५१	६	२२	३७	५३	८	२४	३९	५५	१०	२६	४२
पल	१	३३	४०	३६	७	३९	१०	४३	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	०
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०

	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
वार	३	५	६	०	१	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०					
घटी	५७	१३	२८	४४	५९	१५	३०	४६	१	१७	३२	४८	३	१९	३४					
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२					
विपल	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०	०	३०					

जन्म दिवस को वर्ष के वार से मिलाना चाहिये। यह प्रविष्ठा में एक दिन आगे पीछे भी मिलता है। जितनी प्रविष्ठा को बार मिले लग्न सारणी से १ कम करके जो अंग आवे उसे वर्ष के इष्ट काल में जोड़ दे और योग को फिर

लग्न सारणी से मिलाकर अंकराशि लावे। सारणी अंक निजी अंक से सदा बढ़ा हुआ लेते हैं जो कि वर्ष लग्न स्पष्ट कहलाता है।

—वर्षेष्ट ध्रुवांक सारणी द्वितीय प्रकार—

आयु वर्ष में	दिन	घटी	पल	विपल
१	१	१५	३१	३०
२	२	३१	३	०
३	३	४६	३४	३०
४	५	२	६	०
५	६	१७	३७	३०
६	०	३३	९	०
७	१	४८	४०	३०
८	३	४	१२	०
९	४	१९	४३	३०
१०	५	३५	१५	०
२०	४	१०	३०	०
३०	२	४५	४५	०
४०	१	२१	०	०
५०	६	५६	१५	०
६०	५	३१	३०	०
७०	४	६	४५	०
८०	२	४२	०	०
९०	१	१७	१५	०

कल्पना करें कि हमें २९ वर्ष का वर्षफल बनाना है। तो व्यतीत या गत वर्ष २८ हुए। तो २८ वर्ष का ध्रुवांक लेना पड़ेगा।

प्रथम २० वर्ष का ध्रुवांक लिया जो कि इस प्रकार है ४–१०–३०–०
तत्पश्चात् ८ " " " " " ३–४–१२–०

२८ " " " " हुआ ७–१४–४२–०

७ दिन का १ सप्ताह होता है इसलिये ध्रुवांक ०–१४–४२–०
जन्म का वार इष्टकाल इसमें जोड़ा जो कि यह है ५–३३–३०–०
इन दोनों का जोड़ २९ वर्षेष्ट रूप से प्राप्त हुआ „ „ ५–४८–१२–०

पंचांग से वर्ष का बार मिला कर गते में प्राप्त किया, गते के द्वारा लग्न-सारणी से राशि-अंश और लग्न राशि प्राप्ति के पश्चात् वर्ष-कुण्डली तैयार कर लें। वर्ष का वार, जन्म के बार से प्रविष्ठा में एक दिन आगे पीछे भी मिलता है। राशि-अंश बिल्कुल ठीक या उससे अधिक तो लेते हैं, किन्तु कम कभी नहीं लेते।

प्रथम वर्ष से द्वितीय वर्ष बनाने की रीति

गत वर्ष के बार में १, इष्ट घटियों में १५ और पलों में ३१, और विपल में ३० जोड़कर तिथि में ११ तथा कुल योग में १० जोड़ दें। नक्षत्र में १०, तथा लग्न में ३ राशि १५ अंश जोड़कर जो बार, अंश राशि आदि मिलें उसी में नवीन वर्ष प्रवेश होता है।

वर्ष-प्रवेशकालीन सूर्य में हर साल एक-एक राशि बढ़ाने से जिस दिन मास सूर्य के अंशादि वर्ष प्रवेश सूर्यांशादि के सम हो उसी दिन मास प्रवेश होता है। इसी प्रकार एक-एक बढ़ाने से जब दैनिक रवि कलायें, वर्ष प्रवेश सूर्य की कलाओं के सम हों तो उसी समय दिन का प्रवेश होता है।

वर्ष लग्न में पंचांग से देखकर ग्रह रख दें और जन्म लग्न में जन्म पत्र से देखकर ग्रह स्थापित कर दें। चन्द्रमा को वर्ष इष्ट के अनुसार स्थापित करे केवल पंचांग के आश्रय न रहें। यह सब कुछ स्थापित कर लेने के पश्चात् मुन्था को स्थापित करना चाहिये।

मुन्था जानने की रीति—जन्म लग्न में गत वर्ष जोड़ देने से जो आवे उसे बारह (१२) का भाग देकर जो शेष रहे। वहीं मुन्था रखनी चाहिये। गताब्द में एक (१) जोड़कर (१२) बाहर का भाग देने पर जो शेष रहे (तनुधनु आदि से गिनकर) मुन्था रख देनी चाहिये।

वर्ष लग्न निकालने की रीति—गत वर्षों को ३ से गुणा करके (२) दो स्थानों में अलग-अलग रख दे। प्रथम स्थान गुणनफल को ३० से भाग दे और लब्धि को दूसरे गुणनफल में जोड़ दे और उस जोड़को बारह (१२) से भाग दे और शेष को जन्म लग्न में जोड़ दे तो यही उस वर्ष का वर्ष लग्न होगा। उदाहरण के लिये हम गत वर्ष ५१ लेते हैं। इसको ३ से गुणा करके २ स्थानों पर रखते हैं।

```
  ५१        ३०)१५३(५           १५३
   ३           १५०               ५
 ----        -----          ------
 १५३             ३       १२)१५८(१३ शेष २
                             १२
                            ----
                             ३८
                             ३६
                            ----
                              २
```

कल्पना करो जन्म लग्न तुला (७) हो तो २+७=९ वर्ष लग्न हुआ।

वर्ष तिथि निकालने की रीति—गताब्द को ११ से गुणाकर १७० से भाग दो, लब्धि गुणनफल में जोड़ दो। जन्म तिथि शुक्ल पक्षादि क्रम से जोड़ दो, योग में तीस का भाग देने पर जो शेष रहे उसी को वर्षप्रवेश की तिथि जानो—

उदाहरण—

कल्पना किया गत वष ४४ है तो—

```
      ४४                 ४८४
      ११                   २               १
    -----               -----          -------
१७०)४८४(२ लब्धि          ४८६          १५)२३
    ३४०                 १५+२           १५  शुल्कपक्ष
    -----               -----           ८  कृष्णपक्ष
    १४४              ३०)५०३(१६         ----
                        ३०         यही वर्ष प्रवेश तिथि है।
                       ----
                       २०३
                       १८०
                       ----
                        २३
```

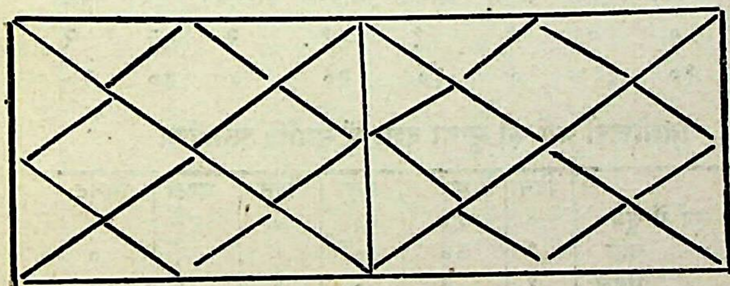
मुन्था जिस राशि पर हो उसके स्वामी को मुन्थेश कहते हैं।

वर्ष फल लिखने की रीति

ब्रह्मा करोतु दीर्घायुर्विष्णुः करोतु सम्पदाम् ।
शिवः करोतु कल्याणम् यस्यैषा वर्षपत्रिका ॥

श्री शुभ सम्वत् × शाके × तत्र मासानामुत्तमे अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वारे × घड़ी × पल अमुक नक्षत्रे × घट्यः × पलानि शुभ योग × घट्यः × पलानि अमुक विष्टी करणे × घट्यः × पलानि तत्र दिनमानं ×।× रात्रिमानं ×।× मिश्रमानम् ×।× समस्त मानम् ६०.०० अथानेन: सौरमानेन अमुक राशि अमुक प्रविष्टा वर्षेष्टम् ×।× तत्समये अमुक लग्नोदये लग्नस्पष्टम् ×।×।×।× अमुक श्रीमान्.........अमुक.........वर्षप्रवेशः गताब्दाः.........शुभम् ।

वर्ष लग्न जन्म लग्न



वर्ष की महादशा (मुग्धा दशा) बनाने की रीति

जन्म महादशा में गत वर्ष जोड़कर ९ का भाग देने से जो शेष रहे उसी को प्रथम वर्ष दशा मानकर क्रमशः सम्पूर्ण दशाओं को यथाक्रम रख दो और जन्म महादशाओं को तिगुना करके वर्ष के मास दिन आदि निकालकर रख दो जो कि इस प्रकार से है। यदि शेष न बचे तो अन्त की दशा को ही प्रथम रख देना चाहिए ।

वर्ष की दशाओं के मास और दिवस

दशा	सूर्य	चन्द्र	मंगल	राहु	गुरु	शनि	बुध	केतु	शुक्र
मास	०	१	०	१	१	१	१	०	२
दिवस	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०

वर्ष की योगिनी (मुग्धा) दशा बनाने की रीति

जन्म योगिनी (मुग्धा) दशा में गत वर्ष जोड़कर ८ का भाग देने पर जो शेष रहे उसी को वर्ष योगिनी दशा का प्रारम्भ समझना चाहिए। यदि शेष न रहे तो अन्त की दशा को ही प्रथम रख सम्पूर्ण दशाओं को यथाक्रम रख देना चाहिए। योगिनी जन्म दशा वर्षों को दश गुना करके वर्ष के मास दिवस यथाक्रम रख देने चाहिये जो कि इस प्रकार से है—

वर्ष योगिनी दशा के मास और दिवस

दशा	मंगला	पिंगला	धान्या	भ्रामरी	भद्रिका	उल्लिका	सिद्धा	संकटा
मास	०	०	१	१	१	२	२	२
दिवस	१०	२०	०	१०	२०	०	१०	२०

विंशोत्तरी वर्ष की मुग्धा दशा में सूर्यादि अन्तर्दशा

		दिन	घड़ी	पल	दिन	घण्टा	मिनट
सूर्य	सूर्य में सूर्य	०	५४	०	०	२१	३६
दशा	,, चन्द्र	१	३०	०	१	१२	०
१८	,, मंगल	१	३	०	१	१	१२
दिन	,, राहु	२	४२	०	२	१६	४८
	,, जीव	२	२४	०	२	९	३६
	,, शनि	२	५१	०	२	२०	२४
	,, बुध	२	३३	०	२	१३	१२
	,, केतु	१	३	०	१	१	१२
	,, शुक्र	३	०	०	३	०	०
चन्द्र	चन्द्र में चन्द्र	२	३०	०	२	१२	०
दशा	म.	१	४५	०	१	१८	०

	ग्रह	दिन	घड़ी	पल	दिन	घण्टा	मिनट
३०	रा.	४	३०	०	४	१२	०
दिन	जी.	४	०	०	४	०	०
	श.	४	४५	०	४	१८	०
	बु.	४	१५	०	४	६	०
	के.	१	४५	०	१	१८	०
	शु.	५	०	०	५	०	०
	सू.	१	३०	०	१	१२	०
मंगल	मंगल में मंगल	१	१३	३०	१	५	२४
दशा	रा.	३	९	०	३	३	३६
२१	जी.	२	४८	०	२	१९	१२
दिन	श.	३	१९	३०	३	७	४८
	बु.	२	५८	३०	२	२३	२४
	के.	१	१३	३०	१	५	२४
	शु.	३	३०	०	३	१२	०
	सू.	१	३	०	१	१	१२
	च.	१	४५	०	१	१८	०
राहु	राहु में राहु	८	६	०	८	२	२४
दशा	जी.	७	१२	०	७	४	४८
५४	श.	८	३३	०	८	१३	१२
दिन	बु.	७	३९	०	७	१५	३६
	के.	३	९	०	३	३	३६
	शु.	९	०	०	९	०	०
	सू.	२	४२	०	२	१६	४८
	च.	४	३०	०	४	१२	०
	मं.	३	९	०	३	३	३६
गुरु	गुरु में गुरु	६	२४	०	६	९	३६
दशा	श.	७	३६	०	७	१४	२४
४८	बु.	६	४८	०	६	१९	१२
दिन	के.	२	४८	०	२	१९	१२
	शु.	८	०	०	८	०	०
	सू.	२	२४	०	२	९	३६
	च.	४	०	०	४	०	०
	मं.	२	४८	०	२	१९	१२
	रा.	७	१२	०	७	४	४८
शनि	शनि में शनि	९	१	३०	९	०	३६

	ग्रह	दिन	घड़ी	पल	दिन	घण्टा	मिनट
दशा	बु.	८	४	३०	८	१	४८
५७	के.	३	१९	३०	३	७	४८
दिन	शु.	९	३०	०	९	१२	०
	सू.	२	५१	०	२	२०	२४
	च.	४	४५	०	४	१८	०
	मं.	३	१९	३०	३	७	४८
	रा.	८	३३	०	८	१३	१२
	वृ.	७	३६	०	७	१४	२४
बुध	बुध में बुध	७	१३	३०	७	५	२४
दशा	के.	२	५८	३०	२	२३	२४
५१	शु.	८	३०	०	८	१२	०
दिन	सू.	२	३३	०	२	१३	१२
	च.	४	१५	०	४	६	०
	मं.	२	५८	३०	२	२३	२४
	रा.	७	३९	०	७	१५	३६
	वृ.	६	४८	०	६	१९	१२
	श.	८	४	३०	८	१	४८
केतु	केतु में केतु	१	१३	३०	१	५	२४
दशा	शु.	३	३०	०	३	१२	०
२१	सू.	१	३	०	१	१	१२
दिन	च.	१	४५	०	१	१८	०
	मं.	१	१३	३०	१	५	२४
	रा.	३	९	०	३	३	३६
	वृ.	२	४८	०	२	१९	१२
	श.	३	१९	३०	३	७	४८
	बु.	२	५८	३०	२	२३	२४
शुक्र	शुक्र से शुक्र	१०	०	०	१०	०	०
दशा	सू.	३	०	०	३	०	०
६०	च.	५	०	०	५	०	०
दिन	मं.	३	३०	०	३	१२	०
	रा.	९	०	०	९	०	०
	वृ.	८	०	०	८	०	०
	श.	९	३०	०	९	१२	०
	बु.	८	३०	०	८	१२	०
	के.	३	३०	०	३	१२	०

हर्षबल की किस्में और उसके बनाने की रीति

हर्षबल ४ प्रकार का होता है जोकि निम्नांकित प्रकार से निकाला जाता है।

प्रथम बल—यदि सूर्य वर्ष लग्न से नवें स्थान पर हो तो ५ बल पाता है। चन्द्र लग्न से तीसरे स्थान पर ५ बल पाता है। मंगल लग्न से छठे स्थान पर ५ बल पाता है। बुध लग्न में ५ बल पाता है। बृहस्पति ग्यारहवें स्थान में ५ बल पाता है। शुक्र पाँचवें स्थान में ५ बल पाता है और शनि बारहवें स्थान में ५ बल पाता है। पदच्युत स्थान पर प्रत्येक ग्रह शून्य ० बल पाता है। प्रत्येक बल वर्ष लग्न से ही प्राप्त करना चाहिए, जन्म लग्न से नहीं।

द्वितीय बल—वर्ष लग्न में जो ग्रह अपने उच्च या स्वगृही स्थान का हो वह ५ बल पाता है। स्थान-भ्रष्ट होने पर शून्य (०) बल पाता है।

तृतीय बल—वर्ष लग्न से (१ २, ३, ७, ८, ९) स्थानों पर स्त्री ग्रह और (४, ५, ६, १०, ११, १२) पर पुरुष ग्रह ५ बल पाते हैं। स्थान-च्युत होने पर दोनों ही ग्रह (स्त्री और पुरुष) शून्य बल पाते हैं।

चतुर्थ बल—दिन के वर्ष प्रवेश में पुरुष ग्रह ५ बल और रात्रि वर्ष प्रवेश इष्ट-काल में स्त्री ग्रह ५ बल पाते हैं। जिनके योग द्वारा फलादेश कहना चाहिये। उदाहरण के लिये—

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मङ्गल	बुध	बृह०	शुक्र	शनि
प्रथम बल							
द्वितीय बल							
तृतीय बल							
चतुर्थ बल							
योग							
फल							

पंचवर्गी चक्रम्

जन्मेश—जन्मलग्न के स्वामी को रखना चाहिये।

वर्षेश—वर्ष लग्न के स्वामी को रखना चाहिये।

मुन्थेश—मुन्था राशि के स्वामी को रखना चाहिये।

त्रिराशेष—दिन में वर्ष प्रवेश हो तो सूर्य जिस राशि पर हो तो उसका स्वामी रात्रि वर्ष प्रवेश में चन्द्र जिस राशि पर हो तो उसका स्वामी ही त्रिराशेष रखना चाहिये।

वर्षराट्—इन सभी अधीश्वरों में जो सबसे वलवान् हो और लग्न को पूर्ण से देखता हो। यदि पूर्ण दृष्टि न हो और सभी समान वली हों तो मुन्थेश को ही वर्षराट् मानकर रखना चाहिये।

त्रिपताकी-चक्रम्

प्रवेशाब्दो नवाशेषे जन्मराशिस्तु चन्द्रमाः।
भौमादि सूर्य सहिता वेदभाजित शेषको ॥

वर्ष लग्नस्य मध्यस्था राहु केतु रसे भजेत्।
गता समारूप युताश्च तष्टा नन्दे भवेसित गुरु रब्धि तष्टा ॥

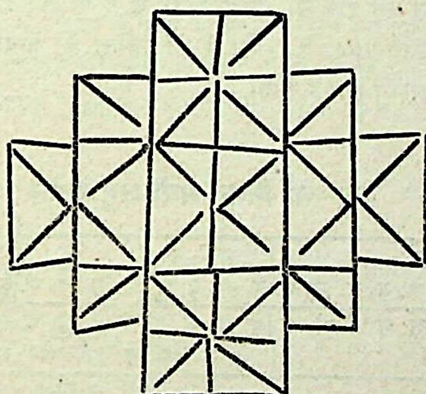
आदित्य सौम्य कवि सूर्यपुतः स्वजन्मराशि त्रिपताकी चक्रम्।
षड्त्वाष्टता भौमविलोम राहुस्थाप्यं गता राहु च सप्त केतु ॥

त्रिपताकी का चन्द्रमा निकालने के लिये वर्ष प्रवेश की संख्या में ९ का भाग देते हैं। शेष को उतनी राशि संख्या पर जन्मराशि के चन्द्रमा से गिनकर रख देते हैं। यही त्रिपताकी का चन्द्रमा होता है।

सूर्य-बुध-बृहस्पति-शुक्र और शनि को निकालने के लिये प्रवेश वर्ष में ४ का भाग देते हैं और शेष को जन्म स्थान के ग्रहों से गिन कर रख देते हैं।

राहु-केतु और मंगल को निकालने के लिए प्रवेश वर्ष संख्या में ६ का भाग देते हैं और शेष को जन्म के राहु से विपरीत गिनकर रख देते हैं केतु को राहु से सप्तम स्थान पर ही रखना चाहिए। जन्म मंगल से आये हुए शेष की संख्या पर मंगल रखकर त्रिपताकी-चक्रम् निम्नांकित तरीके से बनाकर पूर्ण कर लेते हैं।

लग्नम्



प्रत्येक सीधी रेखा पर ग्रह वेध होता है। जिनमें चन्द्र वेध ही प्रधान है।

फल—यदि त्रिपताकी चक्र में चन्द्र का सूर्य से वेध हो तो विद्ध दशा में मनुष्य को गर्मी पित्तादि के कारण ज्वर आता है और मन में सन्ताप रहता है।

चन्द्र-मंगल वेध होने से रक्त विकार, शरीर पीड़ा, रक्तचाप तथा मानसिक रोग होते हैं।

चन्द्र-बुध वेध होने पर, कुटुम्ब कलह, मन उद्विग्न, धन की प्राप्ति शत्रुभय रहता है।

चन्द्र-वृहस्पति वेध होने पर सुख, शान्ति, पूजा पाठ, धनलाभ, विजयादि सुख होते हैं।

चन्द्र-शुक्र वेध होने पर, ज्ञान, विद्या की प्राप्ति, आशा से कम धन लाभ,

शत्रुपक्ष पर विजय, वायु-विकार, जलादि भय, वासना के प्रबल होने से मन-उच्चाटन होता है।

चन्द्र-शनि वेध होने से नीच की संगति, वायु प्रकोप, नीच कर्मरत, अनेक रोग नजला-जुकाम आदि होते हैं।

चन्द्र-राहु वेध होने से, पेट दर्द, चित्त मलिन, दूषित विचार, पाप रत, कीर्तिक्षय तथा अनेक कष्ट प्राप्त होते हैं।

चन्द्र-केतु वेध होने से अनेक प्रकार के दुःखों की प्राप्ति होती है। मन मलिन रहता है। पेट में दर्द होता है मन्दाग्नि आदि होने से स्वास्थ्य बिगड़ जाता है।

वर्ष निसर्ग मैत्री शत्रु चक्रम्

ग्रहः	सू.	च.	म.	बु.	बृ.	शु.	श.	रा.
मित्रम्	च. म. बृ.	सू. मं. बृ.	सू. च. बृ.	शु. श.	सू. च. मं.	बु. श.	शु. बु.	बु. शु.
शत्रुः	बु. शु. श.	बु. शु. श.	बु. शु. श.	सू. च. मं. बृ.	बु. शु. श.	सू. च. मं. बृ.	सू. च. मं. बृ.	सू. च. मं. बृ. श.

वर्ष में तात्कालिक मित्र शत्रु परिज्ञान—

प्रत्येक ग्रह से (३, ५, ९, ११) स्थान पर स्थित ग्रह मित्र होता है।

प्रत्येक ग्रह से (२, ६, ८, १२) स्थान पर स्थित ग्रह सम होता है।

प्रत्येक ग्रह से (१, ४, ७, १०) स्थान पर स्थित ग्रह शत्रु होता है।

वर्ष में स्त्री पुरुष ग्रह परिज्ञान—

सूर्य-मंगल-बृहस्पति ये तीनों ही वर्ष में पुरुष ग्रह समझे जाते हैं। और चन्द्र-बुध-शुक्र और शनि वर्ष में स्त्री ग्रह समझे जाते हैं।

सूर्यादि ग्रहों के दीप्तांश परिज्ञान—

दीप्तांश सूर्य के १५, चन्द्र के १२, मंगल के ८, बुध के ७, बृहस्पति के ९, शुक्र के ७, शनि के ९ होते हैं। जो ग्रह अपने दीप्तांशों के अन्तर्गत

होते हैं, तो इत्थशालादि योग का पूर्ण फल होता है और दीप्तांशों के इधर-उधर होने पर नियम उल्लंघन का फल मध्यम होता है।

इत्थशाल योग—दो ग्रहों का एकस्थ या दृष्टि-सम्बन्ध होने पर इत्थशाल योग वर्ष में ही होता है। चन्द्रमा सब ग्रहों के साथ, बुध चन्द्र को छोड़कर सब ग्रहों के साथ, शुक्र चन्द्र-बुध को छोड़कर सबके साथ, सूर्य मंगल-बृहस्पति-शनि के साथ और बृहस्पति शनि के साथ इत्थशाल योग करता है। यदि उन दोनों ग्रहों के मध्य में कोई शीघ्रगति वाला ग्रह अल्पांश हो और अग्रस्थ मन्दगति वाला ग्रह अधिकांश पर हो, तो शीघ्रगति ग्रह मन्दगति ग्रह को अपना तेजांश देकर १½ पल तक की कमी पूर्ण करके इत्थशाल फल को प्रदान करता है।

ईसराफ योग—अंशादि में मन्दगति ग्रह से शीघ्रगति ग्रह अधिक होने पर होता है।

काम्बूल योग—यदि चन्द्रमा इत्थशाल कारक दोनों ग्रहों से इत्थशाल करे तो होता है।

इक्कवाल योग—वर्ष-प्रवेश कुण्डली में केन्द्र(१, ४, ७, १०)तथा पणफर (२-५-८-११) में समस्त ग्रहों के होने पर होता है।

इन्दुवार योग—(३-६-९-१२) में समस्त ग्रहों के होने पर होता है।

फल इत्थशाल—योग शुभ फलदायक है। यह मनुष्य को परिश्रमशील, क्रियान्वित, भोग-विलास-प्रिय, धन-धान्यपूर्ण, सुखी, तरक्की, वृद्धि कराता है।

फल ईसराफ—यह योग प्रत्येक प्रकार में हानि ही करता है। अशुभ योग है।

काम्बूल फल—यह शुभ योग है, धन-जन, सुखादि में वृद्धि करता है।

इक्कवाल फल—नौकरी में तरक्की, धन की प्राप्ति, जीवन सुखी रखता है।

इन्दुवार फल—यह योग अशुभ-फलदायक है। इसमें धन-जन हानि, मानसिक वेदना, बीमारी, शत्रु-भय आदि होता हैं।

मुन्थाफलम्

(१) लग्न में मुन्था—लग्न की मुन्था शत्रुओं का नाश, स्थान-हानि (मकान बदलना, दफ्तर बदलना आदि), पराक्रम में वृद्धि, कार्य में उत्साह, शरीर को नीरोग, चित्त में शान्ति, मानसिक सुख, अनेक उद्योगों में सफलता, नौकरी में वृद्धि, व्यापार में सफलता, इष्ट-मित्रों से प्रेम तथा सौख्य में वृद्धि करती है।

(२) धन में मुन्था—जब दूसरे घर में मुन्था हो, तो नौकरी में उन्नति, व्यापार में लाभ, अनेक भोग-विलास तथा मिष्टान्न खाने को तबीयत करती है। उत्साहपूर्वक धन की प्राप्ति, इष्टमित्रों में आदर-सत्कार तथा यश की प्राप्ति होती है। शरीर सुखी, पुष्ट तथा नीरोग-स्वस्थ रहता है। है। तीर्थयात्रा, धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ती है।

(३) सहज में मुन्था—जब तीसरे घर में मुन्था हो, तो अपने ही पराक्रम द्वारा धन-यश-सुख की प्राप्ति होती है। ईश्वर, धर्म, अपने पूज्यों के प्रति श्रद्धा-भक्ति बढ़ती है। नौकरी, व्यापार में उन्नति, आमोद-प्रमोद में मन लगता है, शरीर नीरोग तथा चित्त शान्त रहता है और अपना प्रताप बढ़ता है। मनुष्य निजी सौन्दर्य के साथ-साथ पर-सौन्दर्य की ओर बढ़ता है।

(४) सुख में मुन्था—जब मुन्था चतुर्थ भाव में हो, तो शरीर में पीड़ा, दर्द, वायुविकार, शत्रु-भय, अपने-परायों में विरोध, मन में सन्ताप, चित्त में अशान्ति, लोक में बदनामी, रोग में वृद्धि तथा सुख में कमी करती है। नौकरी, व्यापार में असन्तोष तथा स्थान-परिवर्तन के साथ-साथ दुःखित करती है।

(५) सुत में मुन्था—जब मुन्था पंचम भाव में हो, तो मनुष्य के प्रताप में वृद्धि, स्वबुद्धि के अनुसार अपनी नौकरी तथा व्यापार में लाभ, विद्या के कारण धन की प्राप्ति, शुभ कार्यों तथा धर्म में रुचि, तीर्थयात्रा-प्रसंग, विवाहित पुरुषों को गर्भवती स्त्री से पुत्र की प्राप्ति, अविवाहितों को विषय-

लालसा बढ़ती है तथा सुख मिलता है, पढ़ने में रुचि बढ़ती है। परीक्षार्थी परीक्षा में उत्तीर्ण होते हैं।

(६) रिपु में मुन्था—जब मुन्था छठे भाव में होती है, तो मनुष्य की दुष्ट कर्मों में रुचि बढ़ती है, धन-धर्म की हानि होती है, व्यर्थ में कलह होता है, मन में हर समय उत्तेजना रहती है। शरीर में रोग, चित्त में अशान्ति, स्वभाव में चिड़चिड़ापन, व्यर्थ शत्रुता, नौकरी, व्यापार में हानि-भय, उद्योग शिथिल तथा पश्चात्ताप रहता है।

(७) जाया में मुन्था—जब मुन्था सप्तम भाव में हो, तो स्त्री तथा भाइयों से दुःख मिलता है। शत्रुओं का भय, धन, धर्म का नाश, अधर्म में रुचि, शरीर में रोग, चित्त में मोह, उल्टे कार्यों में रति, व्यर्थ चेष्टा, उत्साह-भंग तथा व्यसन बढ़ते हैं।

(८) मृत्यु में मुन्था—जब मुन्था अष्टम भाव में हो तो दुःखमय दूर देशाटन होता है। धन-धर्म का ह्रास, पराक्रम की हानि, चोरी भय, नौकरी में गड़बड़, व्यापार में हानि, बुरे कर्मों में रुचि, शरीर में पीड़ा, रोग में वृद्धि, तथा बल का ह्रास होता है। मनुष्य प्रत्येक प्रकार से हतोत्साह रहता है। स्थान-परिवर्तन भी होता है।

(९) भाग्य में मुन्था—जब मुन्था नवम भाव में हो, तो मनुष्य को नौकरी में उच्चपद की प्राप्ति तथा उन्नति होती है। ईश्वर, धर्म, शुभ कर्मों यथा तीर्थ-यात्रा, देशाटन में रुचि बढ़ती है। स्त्री-पुत्रादि, बन्धु-बान्धवों से सुख तथा अपने-परायों में सत्कार, यश तथा बड़ाई मिलती है, जो कि भाग्योदय में सहायक होते हैं। उसका आमोद-प्रमोद तथा धार्मिक उत्सवों में तथा शुभ कार्यों में खर्च होता है।

(१०) राज्य में मुन्था—जब मुन्था दशम भाव में हो, तो सरकारी नौकरी करनेवालों की तरक्की, स्वजन, परिजनों का उपकार, शुभ कार्यों में सिद्धि, धर्म में रुचि, ईश्वर-देवताओं में विश्वास, तथा स्वयश की वृद्धि होती

है। सत्कर्म द्वारा अनेक प्रकार से धन का लाभ होता है और गुरुजनों की कृपा रहती है ।

(११) लाभ में मुन्था—जब ग्यारहवें स्थान में मुन्था हो, तो सरकारी धन से लाभ, अनेक प्रकार से भाग्योदय, नौकरी में उन्नति, स्वजनों का मिलाप, मन प्रसन्न, चित्त शान्त, व्यापार में खूब लाभ, स्त्री-पुत्र का सुख, आमोद-प्रमोद से समय व्यतीत होता है, उत्सवों में मन लगता है, मनोरथ की सिद्धि तथा अभीष्ट की प्राप्ति होती है । सौभाग्य से राज्य-कृपा प्राप्त होकर हृदय में आनन्द की अनुभूति होती है ।

(१२) व्यय में मुन्था—जब मुन्था बारहवें स्थान में होती है, तो उस मनुष्य को उस वर्ष पराक्रम से प्राप्त किये गये धन-धर्म का ह्रास या नाश, स्थान-परिवर्तन, अपने-परायों में विरोध तथा कलह, शरीर को अस्वस्थ तथा रोग-सहित बनाती है, अधर्म में खर्च कराती है । दुर्जन तथा दुष्ट संग से निन्दा होती है, बदनामी आती है और जीवन दुःखमय व्यतीत होता है ।

वर्ष-प्रवेश के लिये शुभाशुभ, तिथि, वार, नक्षत्र फल

नन्दा, भद्रा, जया और पूर्णा, (१, ६, ११); (२, ७, १२); (३, ८, १३); (५, १०, १५) तिथियों में यदि वर्ष का प्रवेश हो, तो शुभ ग्रह वर्ष में शुभ फल देते हैं, किन्तु रिक्ता (४, ९, १४) में यदि वर्ष का प्रवेश हो, तो शुभ फल नहीं होता ।

शुभ वार—चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र वार को यदि वर्ष का प्रवेश हो, तो शुभ फल होता है ।

अशुभ वार—रवि, मंगल, शनिवार को यदि वर्ष प्रवेश हो, तो अशुभ फल होता है ।

शुभ नक्षत्र—अश्विनी, मृगशिरा, हस्त, पुष्य, पुनर्वसु, स्वाती, रेवती ।

मध्य नक्षत्र—कृत्तिका, रोहणी, आर्द्रा, ज्येष्ठा, मूल, श्रवण, अनुराधा, तीनों पूर्वा और तीनों उत्तरा।

अशुभ नक्षत्र—भरणी, मघा, चित्रा, विशाखा, शततारका, धनिष्ठा, अश्लेषा।

नोट—वर्ष-प्रवेश के लिये निन्दित, अशुभ योग अथवा भद्रा मिश्रित योग शुभ-फलदायक नहीं होते।

बलाबल वर्षेश दशा फलम्

सूर्य—यदि वर्षेश सूर्य पूर्ण बली हो, तो राज्य से लाभ, धन-धर्म, भूमि, इष्ट-मित्र, कीर्ति-यश, प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। शत्रुओं पर विजय, मुकदमें में जीत तथा शुभ देशाटन से लाभ होता है।

यदि वर्षेश सूर्य मध्यबली हो, तो स्वजनों से सुख कम, शरीर अस्वस्थ, सदा रोग-भय लगा रहता है। अधिकारियों से अनबन तथा गुरुजनों से विवाद होता है।

यदि वर्षेश सूर्य नष्ट या हीन बली हो, तो मनुष्य को शारीरिक कष्ट के के साथ-साथ चित्त में व्याकुलता, मन अशान्त, परवशता का दुःख अखरता है। इष्ट-मित्रों से वैर, धन-धर्म की हानि, सबसे कलह तथा अपवाद, निन्दा और घर से दूर रहना पड़ता है, संताप होता है।

चन्द्र—यदि वर्षेश चन्द्र पूर्ण बली हो, तो राज्य से नौकरी में लाभ, व्यापार में सफेद वस्तुओं के क्रय-विक्रय से लाभ, रतिक्रिया में विशेष सुख मिलता है।

यदि वर्षेश चन्द्र मध्यबली हो, तो नौकरों को उच्चाधिकारियों से विरोध के कारण हानि, उन्नति में रुकावट, स्त्री-बच्चों की ओर से उदासीन, मन मलिन, शारीरिक कष्ट होता है।

यदि वर्षेश चन्द्रमा नष्ट बली हो, तो मनुष्य को वात-कफादि पीड़ा, राज्याधिकारियों से वैर के कारण स्थान-हानि तथा उन्नति में रुकावट होती

है। अपने-परायों से शत्रुता के कारण भय, परान्न में वृत्ति तथा धातु-क्षीणता, प्रमेहादि रोग उत्पन्न होते हैं, कुत्सा होती है।

मंगल—यदि वर्षेश मंगल पूर्ण बली हो, तो राज्याधिकारियों से धन-लाभ, लड़ाई-मुकदमें में विजय, पुलिस या सेना-विभाग में नौकरी मिले, स्त्री-सहयोग से यश धन मिले।

यदि वर्षेश मंगल मध्यबली हो, तो शारीरिक रोग उत्पन्न होकर बल क्षीण होता है, द्वन्द्व-युद्ध में चोट भय रहता है। अनेक प्रकार से द्रव्य तथा पराक्रम की हानि होती है। चोरों तथा दूसरे व्यक्तियों से और अपने अफसरों से विवाद के कारण वैर तथा हानि होती है।

जब वर्षेश मंगल हीन अथवा नष्ट बली होता है, तो स्वजनपरिजनों से विरोध तथा कलह रहता है। रोगी रहने के कारण स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है। उसे रक्तपित्त विकार के साथ-साथ धन-धान्य की हानि होती है। दुष्ट जनों से भय, अपयश तथा दुःख मिलता है।

बुध—यदि वर्षेश बुध पूर्ण बली हो, तो अत्यन्त सुख, नौकरी, व्यापार, विद्या से सत्कार प्राप्त होता है। पठन-पाठन तथा लेखन-कला से धन-लाभ होता है। स्त्री, पुत्र, इष्ट मित्रों में सहयोग से आमोद-प्रमोद में सुख प्राप्त होता है।

यदि वर्षेश बुध मध्य बली हो, तो इष्ट मित्र, सुत-स्त्री आदि से कलह रहता है, व्यापार में असमानता, नौकरी में अफसरों से अनबन तथा हानि होती है। सर्व सुखों में हानि तथा स्वजन वैर से मनस्ताप बढ़ता है।

जब वर्षेश बुध हीन या नष्ट बली होता है, तो है तो धन-धान्य-विद्या का ह्रास, चोरों तथा राज्य से भय, कंठ, हृदय तथा नेत्र में रोग होता है, व्यर्थ मुकदमें की गवाही देनी पड़ती है और दुःख की प्राप्ति होती है। चित्त में चंचलता बढ़ती है जिस कारण बदनामी होती है।

बृहस्पति—यदि वर्षेश गुरु पूर्ण बली हो, तो राज्य से लाभ, अपने-परायों

में आदर, यश प्राप्त होता है। विवाहित को स्त्री-पुत्रों से सुख तथा शत्रुओं पर विजय, मुकदमें में जीत और जीवन आमोद-प्रमोदमय सुखी रहता है। सबका विश्वसनीय होता है।

यदि वर्षेश गुरु मध्य बली हो, तो अपने-परायों से विवाद, कलह तथा राज्याधिकारियों से अनबन तथा विरोध, धन-हानि, स्वास्थ्य खराब, मान-हानि, शरीर दुर्बल होने के साथ-साथ चोरी का भय भी लगा रहता है।

यदि वर्षेश गुरु हीन या नष्ट बली हो, तो इष्ट-मित्र, स्त्री-पुत्र आदि का त्याग हो जाने से वियोग-दुःख होता है। धन-धर्म, सुख-शान्ति आदि का ह्रास होता है। वायु-कफादि रोग बढ़ते हैं, चित्त में बेचैनी, मन में सन्ताप, लोक में अपवाद तथा शत्रु-भय रहता है।

शुक्र—यदि वर्षेश शुक्र पूर्ण बली हो, तो शरीर में आरोग्य, आमोद-प्रमोद, हास्य-विलास में, नाच-गान में प्रसन्नता से समय व्यतीत होता है। राज्य से लाभ, सौख्य में वृद्धि, विद्या में उन्नति, मुकदमें में विजय होती है।

यदि शुक्र वर्षेश मध्य बली हो, तो शत्रु-वृद्धि, ऑफीसरों से अनबन, मान-हानि, स्त्री-पुत्रों से कष्ट, धातु-कफ विकार, व्यर्थ उद्योग, धन-धर्म का ह्रास होता है।

जब वर्षेश शुक्र हीन या नष्ट बली होता है, तो शत्रुओं द्वारा मानहानि, अपने-परायों से विवाद-कलह, धन-धर्म की हानि, स्त्री-बच्चों को कष्ट तथा बुद्धि का ह्रास होने से विपरीत कार्य होते हैं जिससे शोक-भय-चिन्ता लगी रहती है।

शनि—यदि वर्षेश शनि पूर्ण बली हो, तो मुकदमें जीत, म्लेच्छ जाति से धन-लाभ, पत्थर; लकड़ी खेती आदि के व्यापार में नफा होता है। शत्रु दबे रहते हैं। यदि वर्षेश शनि मध्य बली हो, तो वायु-जन्य रोगों की उत्पत्ति होती है। पीठ तथा गले में पीड़ा, टोंसिल आदि और कैन्सर तक हो जाते हैं। इष्ट-मित्रों, राज्याधिकारियों से अनबन, स्त्री-बच्चों के कलह पर उदासीनता आती है और धन-धर्म की हानि होती है।

जब वर्षेश शनि नष्ट या हीन बली होता है, तो नीच कर्मों में रति, प्रत्येक उद्योग में विफलता, धन-धर्म तथा कर्म की हानि होती है। वायु-विकार, पेट में अफारा और इष्ट-मित्रों से दुःख मिलता है और अपने किसी प्रिय की मृत्यु से शोक की प्राप्ति-होती है और किसी पशु से चोट भय रहता है।

जब जन्म लग्नेश, वर्षलग्नेश, अष्टमेश, मुन्थेश वलवान् होकर ६-८-१२ भावों के अतिरिक्त केन्द्र, त्रिकोण आदि शुभ भावों में होते हैं, तो समस्त वर्ष अच्छा व्यतीत होता है और सुख-शान्ति, धन-धर्म, यश-कीर्ति लाभ होता है ६-८-१२ में होने से, बलहीन या अशुभ दृष्ट होने पर अशुभ फल होता है। यदि मुन्था ४, ६, ७, ८, १२ स्थानों के अतिरिक्त किसी भी स्थान पर उच्च, वर्षेश मित्रक्षेत्री, तथा स्वक्षेत्री हो, तो अभीष्ट की प्राप्ति होती है।

जन्मलग्न, वर्ष-लग्न तथा उसका इष्टकाल एक ही होने पर द्विजन्मा योग होता है, जिसका फल जन्मफल के अनुसार शुभ ही रहता है।

बलाबल ग्रह दशा फल

पूर्ण बली सूर्य दशा फल—यदि वर्ष में सूर्य पूर्ण बली होकर शुभ स्थान में बैठा हो, तो मनुष्य को सवारी-सुख अपनी हैसियत के मुताबिक धन-लाभ के साथ होता है। शारीरिक सुख के साथ पराक्रम की वृद्धि होती है, प्रताप बढ़ता है, शरीर नीरोग रहता है, धर्म में रुचि बढ़ती है, पवित्रता आती है और स्वच्छ कपड़े पहनने को मिलते हैं।

मध्यबली सूर्य दशा फल—जब मध्यबली सूर्य शुभ स्थान में बैठा हो, तो अपनी दशा में व्यक्ति की योग्यता तथा हैसियत के अनुसार पड़ोस, ग्राम, उपनगर, नगर, देश में धन-धान्य-पूर्ण कीर्ति लाभ देता है। इष्ट मित्रों, पंचायतों में प्रीति, सुख तथा न्याय लाभ कराता है। स्वजनों में प्रताप तथा स्त्री-बच्चों से सुख की प्राप्ति होती है।

हीन या नेष्ट बली सूर्य दशाफल—हीन या नेष्ट बली सूर्य दशा के मनुष्य को रोग, शरीर में पीड़ा, आँखों में दर्द, उत्साह में हीनता, नीच कर्म में रति, माता-पिता से अनबन, बन्धु-बान्धवों, राज्यकर्मचारियों से अनबन, वैर, अशुभ स्थान में बैठने से धन-धर्म का नाश, वध, बन्धन का योग होता है। १,३,१० घर में भी शुभ फल नहीं करता।

पूर्ण बली चन्द्र दशा फल—पूर्ण बली चन्द्र यदि शुभ स्थान में बैठा हो, तो जमीन खरीदना, उच्चपद की प्राप्ति, स्त्री-सुख, सफेद पोशाक पहनने में रुचि, श्वेत वस्तुओं के व्यापार में लाभ, दूध, दही, मक्खन खाने को मिलता है, फलों से प्रीति होती हैं तथा उनका रस पान करने को मिलता है।

मध्य बली चन्द्र दशा फल—चन्द्र के मध्यबली होने पर, पूर्ण बली चन्द्र से फल कम मिलता है। धर्म-कर्म में रुचि, अन्न-वस्त्र, धन-धान्य का भूमि से लाभ होता हैं। स्त्री-सुख मिलता है, मन में विलासिता रहती है।

हीन या नेष्ट बली चन्द्र दशा फल—नेष्ट तथा हीन बली चन्द्र दशा में मनुष्य को शारीरिक कष्ट, नेत्र-रोग, स्त्री-बच्चों तथा घर के लोगों से विवाद, कलह तथा वायु-रोग, नजला-जुकाम और जल से भय रहता है। ४, ६, ८, १२ में विशेष हानि करता है।

पूर्ण बली मंगल दशा फल—पूर्ण बली मंगल यदि शुभ स्थान में बैठा हो, तो भूमि-लाभ, राज्य से धन-लाभ, पुलिस और सेना-विभाग में अधिकार प्राप्त होता है। युद्ध तथा मुकदमें में विजय, हेमताम्र से व्यापार में लाभ होता है और जीवन आमोद-प्रमोद से व्यतीत होता है। मकान बनाने तथा खेती की जमीन से लाभ होता है।

मध्य बली मंगल दशा फल—मध्य बली मंगल दशा में अपने अधिकारियों से ईर्ष्या, अपने प्रताप में कमी, शरीर में रक्त-विकार, फोड़े-फुंसियाँ आदि होते हैं। शत्रु प्रबल होते हैं। स्त्री-बच्चों से विवाद रहता है।

हीन या नेष्ट बली मंगल दशा फल—मंगल के हीन या नेष्ट बली होने

पर प्रताप तथा सामर्थ्य, कीर्ति-यश का ह्रास होता है। ३, ६, ८, ११, १२ में मंगल होने से शरीर में पीड़ा, नेत्र में रोग, पुलिस से भय, रक्त-पित्त विकार, रक्तचाप तथा शत्रु से मानहानि होती है। चोरों, लुटेरों से चोट आती है। नौकरों तथा आफीसरों से अनबन के कारण उन्नति में रुकावट होती है।

पूर्ण बली बुध दशा फल—जब पूर्ण बली बुध शुभ स्थान में बैठा हो, तो बुद्धि का विकास, काव्य-ज्ञान से धन-लाभ होता है जब कि वह ५, ११ में हो। नौकर तथा इष्ट मित्रों से सुख, नौकरी में उन्नति यदि ९, १०, ११ में हो, तो अपने पराक्रम से सभा आदि में यश तथा धन मिलता है। जीवन विनोदमय रहता है, समय सुख से बीतता है।

मध्य बली बुध दशा फल—बुध अपनी मध्य बली दशा में प्रपंचों द्वारा तथा कूटनीति द्वारा बुद्धि-विकास से सुख प्रदान करता है। अपने-परायों से न्यून सुख, विद्या पढ़ने में रुचि तथा धन देता है तथा बच्चों को पढ़ाने में सुख मिलता है।

हीन या नेष्टबली बुध दशा फल—हीन अथवा नेष्ट दशा में बुध हृदय में मोह उत्पन्न करके मनुष्य का पराभव कराता है, नौकरों, छोटे बच्चों द्वारा मानहानि कराता है, उसे गुप्त रोग होता है। दुर्बुद्धि उत्पन्न होती है। ६, ८, १२ में विशेष हानि करता है। नीच राशि गत बुध बन्धन, दारुण वैर के कारण कारागार कराकर अपयश देता है।

पूर्ण बली गुरु दशा फल—जब गुरु पूर्ण बली शुभ स्थान में बैठा हो, तो मनुष्य की बुद्धि का विकास होता है, व्यापार में लाभ, नौकरी में उन्नति तथा उच्चपद की प्राप्ति होती है। आत्मीयजनों में कीर्ति-यश फैलता है। शत्रुभय का नाश, स्त्री-बच्चों से सुख प्राप्त होता है और धन की प्राप्ति होती है।

मध्य बली गुरु दशा फल—जब गुरु मध्य बली हो, तो उपर्युक्त गुरु फल में न्यूनता आ जाती है, किन्तु जीवन सुखमय व्यतीत होता है। सुहृदयों की प्राप्ति, धन-वस्त्रादि-लाभ, कीर्ति, यश, तथा स्त्रीसुख सामान्य ही रहता है।

हीन या नेष्टबली गुरु दशा फल—गुरु की हीन या नेष्ट दशा में धन-धर्म

का नाश, कष्ट से आजीविका प्राप्त होती है। शत्रुओं की उत्पत्ति, स्त्री, पुत्र, इष्ट मित्र सभी से विवाद तथा कलह, शरीर में पीड़ा, वायु-रोग, धनधान्य की चोरी होती है। यदि गुरु ६, ८, २१ में हो, तो अत्यन्त अशुभ फल करता है।

पूर्ण बली शुक्र दशा फल—जब शुक्र पूर्ण बली शुभ स्थान में बैठा हो, तो अपनी दशा में स्त्रियों का सहवास, तथा हास-विलास का जीवन देता है। व्यापार में लाभ, नौकरी में राज्य-मान्यता, दूध, दही, मिष्टान्न तथा फलों का सेवन विशेष रूप से २, ४ घर में होने से होता है। अविवाहितों को मित्रों की तथा विवाहितों को पुत्रों की प्राप्ति के साथ नाच-गान रंग की प्राप्ति होती है।

मध्य बली शुक्र दशा फल—मध्य बली शुक्र दशा में वाहन या सवारी सुख अपनी हैसियत के मुताबिक होता है। ससुराल से धन की प्राप्ति, स्वच्छ वस्त्र तथा मिष्टान्न खाने को मिलता है। जीवन आमोद-प्रमोदमय रहता है।

हीन या नेष्टबली शुक्र दशा फल—हीन या नेष्ट बली शुक्र दशा में स्त्री बच्चों से सन्ताप तथा कष्ट मिलता है। धन-धान्य, हाव-भाव, हास्य-विलास का नाश होता है। ज्ञान-विज्ञान का ह्रास, भाई-बन्धु से विवाद तथा विरोध, शोक होता है। ६, ८, १२ में शुक्र विशेष कष्टदायक रहता है। ७, १ में धातु क्षीण करता है।

पूर्ण बली शनि दशा फल—जब शनि पूर्ण बली होकर शुभ स्थान में बैठा हो, तो अपनी दशा में म्लेच्छों, हरिजनों का प्रधानत्व प्रदान कर धन-धान्य का लाभ देता है। ३, ६, ११ में होने से पराक्रम में वृद्धि यश कीर्ति देता है। चर राशि का शनि विदेश-भ्रमण का योग बनाता है।

मध्य बली शनि दशा फल—मध्य बली शनि दशा में आलस्य, कुटुम्बियों से वैर, धन-धान्य का हानि, पशुओं तथा लोहे की वस्तुओं से चोट-भय रहता है। नीच प्रवृत्ति तथा निन्द्य कर्म होते हैं।

हीन या नेष्ट बली शनि दशा फल—हीन या नेष्ट बली शनि अपनी दशा

में नौकरों से दुःख, घन-धर्म का ह्रास कर शरीर में वायु-विकार तथा शस्त्र-पीड़ा देता है। इष्टमित्रों से क़लह करवाकर सन्ताप, वियोग-वेदना, स्त्री-पुत्रों से झगड़ा, सुख की हानि करता है। ३, ६, ११ में नेष्ट बली शनि मुकदमें में विजय तथा पराक्रम से धन देता है।

राहु दशा फल—यदि राहु ३, ६, ११ में अपनी उच्च, स्वग्रही राशि में में बैठा हो, तो पराक्रम से व्यापार में, नौकरी में सफलता; मुकदमे में विजय, ५, ९ में विद्या, धन धर्म में लगन, तीर्थ यात्रा आदि शुभ फल करता है। ४, १० में बन्धन, पीड़ा, दुख, पेट-दर्द, वायु-विकार करता है। ७, ८ में अशुभ फलदायक है।

केतु दशा फल—केतु की दशा सभी प्रकार से अनिष्टकारक होती है। इसमें मनुष्य का शरीर अस्वस्थ रहता है, वायु या वात के बढ़ जाने से हाथ पैरों में भारीपन, मन में उद्‌विग्नता, धन-धान्य की हानि, अपने-परायों तथा कुटुम्ब वालों से विवाद, झगड़ा तथा कलह रहता है। यदि केतु अपने घर का या उच्च का होकर ३, ६, ८ में हो, तो कुछ शुभ रहता है। २, ४, ५, ९ में केतु का फल बहुत ही हानिकारक है। विद्या, भाग्य, कुटुम्ब आदि के बने-बनाए कार्यों का नाश करके मनुष्य को सन्ताप प्रदान करता है।

नोट—यदि वर्ष कुंडली में सभी केन्द्रों में चर राशियाँ शुभ ग्रह से युक्त हों, तो महत्त्वपूर्ण यात्रा होती है। पाप या क्रूर ग्रहों के युक्त होने पर यात्रा शुभ नहीं होती। ४, १० स्थानों में शुभ ग्रह यात्रा नहीं कराते। पाप ग्रह या क्रूर ग्रह वक्री न हों, तो यात्रा अवश्य कराते हैं। यदि नवें घर में लग्नेश चन्द्र हो, तो अनिश्चित गमन होता है और राहु शुभ हो, तो तीर्थ-यात्रा होती है। यदि वर्षेश, वर्ष लग्नेश का योग हो, तो चिन्तित स्थान की यात्रा होती है। यदि सप्तमेश ९ घर में हो, तो अवश्य यात्रा होगी या नवमेश ९ में हो, तो भी यात्रा अवश्य होगी। यदि मुन्था से सप्तम चन्द्र हो, तो भी यात्रा अवश्य होगी। यदि लग्नेश ९ में नवमेश लग्न में हो, तो भी भी यात्रा अवश्य होती है। ६, ८, १२ में प्रत्येक ग्रह अपनी अन्तर्दशागत

अशुभ फल करता है। वर्ष में शुभ ग्रह, जन्म के उन्हीं ग्रहों से २, १२ भावों में होने से शुभ फल करते हैं और पापी तथा क्रूर ग्रह जन्म के उन्हीं ग्रहों से २, १२ में होने से अशुभ फल करते हैं।

मुन्था विशेष फल

जब मुन्था वर्ष में सूर्य से युक्त या सूर्य के घर में या सूर्य से दृष्ट हो, तो शुभ स्थानों पर होने से मनुष्य को व्यापार में लाभ, नौकरी में उन्नति, यश, कीर्ति, अनेक गुणों का विकास होने पर लाभ तथा स्थान-परिवर्तन या यात्रा-संयोग बनता है। अशुभ घरों में हानि होती है।

जब मुन्था वर्ष में चन्द्र के घर में या चान्द्र से युक्त अथवा चन्द्र से दृष्ट होकर शुभ स्थानों पर पड़ी हो, तो धन-धर्म तथा यश की वृद्धि होती है, शरीर स्वस्थ तथा नीरोग रहता है और अनेक नव कार्यों की व्यवस्था होती है। मन में शान्ति, चित्त में सन्तोष, श्वेत वस्तुओं के व्यापार से लाभ, राज्य-मान्य नौकरी में उन्नति होती है। बुद्धि की प्रखरता बढ़ती है, दूध-दही-मक्खन आदि के पक्वान्न, मिष्टान्न, तथा फल खाने को मिलते हैं। अशुभ स्थानों पर होने से धन-हानि, मन में असन्तोष होने से दुःख होता है।

यदि मुन्था वर्ष में मंगल के घर में या मंगल से युक्त अथवा मंगल से दृष्ट होकर शुभ स्थानों में पड़ी हो और साथ ही गुरु या शुक्र अथवा दोनों से दृष्ट हो, तो शुभ फल होता है। ऐसा मनुष्य अपने उद्यम में सफल होकर उन्नति करता है, धन प्राप्त करता है। यदि गुरु-शुक्र से दृष्ट न हो, तो चाहे किसी स्थान पर मंगल के साथ मुन्था वायु-पित्त, अर्श, धातु क्षीण, रुधिर प्रकोप, रक्तपात अथवा शस्त्र-प्रहार के कारण रक्त बहाती है और अनेक प्रकार से कष्ट पहुँचाकर मन में सन्ताप तथा असन्तोष उत्पन्न करती है।

जब मुन्था वर्ष में बुध के घर में या बुध के साथ अथवा बुध से दृष्ट होकर शुभ स्थानों में पड़ी हो, तो मनुष्य को स्त्री, बच्चों का सुख, रिश्तेदारों का सहयोग मिलता है, विद्या में उन्नति होती है, बुद्धि की प्रखरता बढ़ती

है, धन, धर्म, का लाभ, कीर्ति, यश, प्रतिष्ठा का वक्रता द्वारा लाभ तथा आदर सत्कार से सुख मिलता है। ज्ञान-विज्ञान में उत्साह, उत्सवों में प्रतिष्ठा बढ़ती है। अशुभ घरों या भावों में, अशुभ या पाप, क्रूर दृष्ट होने पर अथवा युक्त होने पर शारीरिक कष्ट तथा वेदना मिलती है।

जब मुन्था वर्ष में गुरु के घर में या गुरु से युक्त अथवा गुरु से दृष्ट होकर शुभ भावों में पड़ी हो, तो मनुष्य को स्त्री-पुत्रों का सुख, साधु-सत्संग, इष्ट-मित्रों का सहयोग, सोना-चांदी, श्वेत वस्त्र के व्यापार में लाभ, अनेक स्निग्ध भोजन तथा पक्वान्न खाने को मिलते हैं, जीवन सुख से आमोद-प्रमोदमय व्यतीत होता है, रत्नजटित, या कीमती पत्थरयुक्त अंगूठी आदि शृंगारी वस्तुएँ बनती है। यदि शुभ इत्थशाल योग हो, तो अच्छी नौकरी मिलती है, अशुभ भावों में पाप या क्रूर ग्रहों की दृष्टि होने पर कहीं भी अशुभ फल यश, धन की हानि करती है।

यदि मुन्था वर्ष में शुक्र के घर में या शुक्र से युक्त अथवा शुक्र से दृष्ट किसी शुभ भाव में पड़ी हो, तो मनुष्य को धन, धान्य, स्त्री, पुत्र, बुद्धि, विद्या, हास-विलास, नाच रंग, नाट्य, राग गान, धर्म, स्वाध्याय, नव उत्सवों की प्राप्ति होती है। मन में शान्ति, विलास में प्रीति तथा अनेक शुभ फल होते हैं। अशुभ भावों में या पाप क्रूर दृष्ट होने पर मनुष्य को भोग-विलास, काम-वासना, धातु-क्षय, पर-स्त्रीरति से बदनामी आती है। शारीरिक मानसिक कष्ट तथा दिन बेचैनी से व्यतीत होते हैं।

जब मुन्था वर्ष में शनि से युक्त, शनि से दृष्ट अथवा शनि के घर में शुभ स्थानों में पड़ी हो और साथ ही बली शुक्र या गुरु अथवा दोनों से दृष्ट हो, तो मनुष्य को धन-धान्य का सुख होता है अन्यथा अशुभ स्थानों में या पापी क्रूर ग्रहों के दृष्ट होने पर विशेष रूप से भौम-दृष्ट होने पर मनुष्य को वायु-पित्त-कफ-रुधिर-प्रकोप, रक्त-विकार, रक्त-चाप, शस्त्र-घात तथा फोड़े-फुंसियाँ होने के साथ-साथ अग्निभय, चौरभय, शरीर में पीड़ा, नेत्र-पीड़ा आदि रोग होकर धनव्यय होता है, मन विकल रहता है।

जब मुन्था शुक्र की राशि में मंगल युक्त हो, तो मिश्रित फल होता है। शुक्र-मंगल में जो वली होता है उसी की दशा में विशेष फल होता है। वला-वल अंशों द्वारा निर्धारित करना चाहिये। जब मुन्था राहु के साथ हो और राहु शुभ स्थान पर अपने उच्च तथा स्वगृही के साथ होने पर शुक्र-गुरु से दृष्ट होने से धन-धर्म-धान्यादि का लाभ तथा सुख पहुँचाता है, उच्चपदाधिकार की प्राप्ति होती है, सोने, चाँदी, रत्नवस्त्रादि के व्यापार से लाभ होता है। किन्तु केतु के साथ होने पर इसके विपरीत फल होता है। यदि पाप या क्रूर ग्रहों से दृष्ट हो, तो धन-धर्म-सुख की हानि, आत्मीयजनों से कलह-विवाद, स्थान-परिवर्तन, घर की हानि, शत्रु-चोर-भय, अग्नि-भय, पेट-दर्द वायु-प्रकोप तथा मानहानि तक होती है।

यदि मुन्थेश, वर्षलग्नेश, जन्म लग्नेश आदि बलवान् होकर केन्द्र त्रिकोण में शुभ दृष्ट पड़े हों, तो धन-धर्म-धान्य, वाहन, भूमिस्थान, स्वर्ण, वस्त्रादि के लाभ से सुख मिलता है। ६, ८, १२, १, ४, ७, १० में होने पर यदि मुन्था पाप दृष्ट या पाप क्रूर ग्रह युक्त हो अथवा षष्ठेश और द्वादशेश आदि से युक्त अथवा दृष्ट हो, तो मुन्था शारीरिक कष्ट देने के साथ-साथ अत्यन्त बीमारी के कारण मृत्युकष्ट तथा मृत्यु-भय तक प्रदान करती है। अष्टम मुन्था अष्टमेश की दशा में मरणासन्न अवस्था तक बीमार करती है या मृत्युदायक होती है।

मुन्थादान—कांसे के पात्र में घृत द्वारा छाया-पात्र दान, आज्य, श्वेत वस्त्र, रजत, अष्टधातु के साथ समस्त अन्नों से तुला दान करने पर शुभ फल होता है। मृत्युञ्जय का जाप तथा हवन जरूरी है।

वर्ष में सूर्यादि ग्रहों का द्वादश भावगत शुभाशुभ फल

लग्नगत-सूर्यफल—जिस मनुष्य के वर्ष लग्न में सूर्य एकाकी रूप से विद्यमान हो अथवा पापी या क्रूर ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो, तो उस मनुष्य को उस वर्ष से सूर्य की दशा अशुभ रहती है। उसका शरीर दुर्बल, वायु-पित्त-कफ-श्वासादि रोगों के कारण सिर-आँखों में दर्द, शरीर में खुजली, फोड़े-फुन्सियाँ, स्त्री को कष्ट, बन्धुबान्धवों से विवाद तथा गुप्त चिन्ता के कारण

शरीर में विकलता रहती है, व्यापार में हानि तथा राज्यपदाधिकारियों से अनबन रहने के कारण उन्नति नहीं हो पाती। शुभ ग्रहों से दृष्ट तथा युक्त होने पर अहितकर परिणाम में बहुत कुछ न्यूनता आ जाती है।

द्वितीयगत सूर्य फल—जिस वर्ष मनुष्य के द्वितीय भावगत सूर्य एकाकी अथवा पापी क्रूर ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो उस वर्ष उस मनुष्य का अपने परिवार वालों से विरोध-झगड़ा, आर्थिक कष्ट, शरीर, मुख, आँख में कष्ट, दर्द, पशुओं से चोट-भय तथा उदर में पीड़ा, पित्त रोग का प्रकोप होता है। यदि सूर्य उच्च या स्वग्रही होकर शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो तो प्रचुर मात्रा में धन लाभ होता है और अच्छा सुख मिलता है, किन्तु शुक्र का सहयोग तथा दृष्टिपात हितकर नहीं होता।

तृतीयगत सूर्य फल—जिस वर्ष तृतीय भावगत सूर्य एकाकी या पाप क्रूर ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो तो भाइयों को पीड़ा, बीमारी होती है इसके अतिरिक्त शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट होने पर अपने-अपने पराक्रम द्वारा शत्रुओं का पराभव, नये कार्यों का उद्योग, लक्ष्मी की वृद्धि, धन-धान्य की प्राप्ति, यश कीर्ति की वृद्धि होकर राज्य की सफलता से सुख मिलता है।

चतुर्थगत सूर्य फल—जिस वर्ष सूर्य चतुर्थ भाव में होता है तो मनुष्य को कृषि, पशु सम्वन्धी पीड़ा अर्थात् पशु घात भय, माता को कष्ट, उदर तथा गुप्तांगों में पीड़ा, राज्य नौकरी वाले की अफसरों से अनवन, स्थान परिवर्तन होते हैं। यदि पाप क्रूर ग्रहों से दृष्ट से युक्त हो तो अवश्य ही होते हैं। यदि शुभग्रहों से दृष्ट या युक्त हो, तो इसके कुप्रभाव में वहुत कुछ कमी आ जाती है।

पञ्चमगत सूर्य फल—यदि सूर्य पंचम भाव में एकाकी या पाप क्रूर ग्रहयुक्त अथवा दृष्ट जिस वर्ष में पड़ा हो तो उस वर्ष में मनुष्य का आत्मीयजनों से, पुत्रों से विवाद तथा कलह रहता है। धन-धान्य की कमी के कारण चित्त में क्षोभ, शोक रहता है। किन्तु शुभ ग्रहों के दृष्ट या युक्त होने पर मनुष्य को राज्य भाषा से लाभ, पुत्र की प्राप्ति या पुत्र-सुख होता है। ये फल सूर्य दशा में ही होते हैं।

षष्ठगत सूर्य फल—जिस वर्ष सूर्य छठे भाव में एकाकी अथवा अन्य पापी क्रूर ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो, तो शत्रुओं का नाश, मामा के परिवार को कष्ट तथा स्वगृह में बीमारी होती है। प्रतिकूल इसके यदि शुभ ग्रहों से दृष्ट हो या युक्त हो, तो उस मनुष्य को मुकदमे में विजय, राज्य-पक्ष, व्यापार से लाभ, इष्ट-मित्रों से प्रेम, शरीर-रोग, आँख में पीड़ा, अपने-परायों से न्यून सुख की प्राप्ति होती है। जीवन सामान्य ही रहता है।

सप्तमगत सूर्य फल—जिस वर्ष सूर्य सप्तम भाव में एकाकी या क्रूर पाप ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो, तो मनुष्य को सूर्यान्तर दशागत स्त्री-सहित शरीर में पीड़ा रहती है सिर-आँखों में दर्द, गुप्तांगों तथा पैरों में दर्द, पित्तपीड़ा, मार्ग में चोर, शत्रुओं से आघात-भय रहता है, किन्तु शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त होने पर उपर्युक्त अशुभ फलों में न्यूनता आ जाती है।

अष्टमगत सूर्य फल—जिस वर्ष सूर्य अष्टम भाव में एकाकी या पाप-क्रूर और शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो, तो उस मनुष्य को बन्धु-बान्धवों का दुःख, स्वजनों से कलह, शरीर में पीड़ा, यश की हानि, व्यर्थ बदनामी, स्त्री-पुत्र को रोग तथा अनेक व्याधि लगती है। पित्त वात रोग, धन-धान्य की कमी से विकलता होती है। शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त होने से दूषित प्रभाव में कमी अवश्य हो जाती है।

नवमगत सूर्य फल—जिस वर्ष सूर्य नवम भाव में एकाकी या पाप-क्रूर शत्रु ग्रह से दृष्ट या युक्त हो, तो उस मनुष्य के भाइयों को पित्त-रोग तथा उद्योग की हानि से शरीर-कष्ट पहुँचाता है और मित्र तथा शुभ ग्रहों से दृष्ट तथा युक्त होने पर मनुष्य को राज्य, व्यापार से लाभ, कीर्ति-यश वृद्धि, धन, धर्म में वृद्धि होती है।

दशमगत सूर्य फल—जिस वर्ष सूर्य दशम भाव में एकाकी अथवा पाप, क्रूर शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो पशुओं द्वारा हानि होती है। किन्तु मित्र तथा शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त होने पर वही सूर्य अपनी अन्तर्दशा में राज्य में पदाधिकार-उन्नति, धन का लाभ, धर्म-कर्म का लाभ, उद्योग में

सफलता, यशकीर्ति-बड़ाई के साथ साथ भूमि, मकान, धान्य, हेम, स्वर्ण, दूध, रसादि पदार्थों द्वारा मनुष्य की अपनी हैसियत के मुताविक लाभ पहुंचाकर प्रतिष्ठा प्रदान करता है।

एकादशगत सूर्य फल—जिस वर्ष सूर्य ग्यारहवें भाव में एकाकी अथवा पाप क्रूर या शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त वैठा हो, तो मनुष्य के पुत्रों को वीमारी तथा मानसिक कष्ट रहता है। यदि वही सूर्य शुभ या मित्र ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो, तो उस वर्ष उस मनुष्य को अपनी गर्भवती स्त्री से पुत्र की प्राप्ति होती है, पद में तथा धन-धर्म-धान्य में वृद्धि-लाभ होता है। आमोद-प्रमोदमय जीवन व्यतीत करने के लिए सुख-सौख्य, सुवर्ण आदि की प्राप्ति राज्याधिकार से होती है।

द्वादशगत सूर्य फल—जिस वर्ष सूर्य वारहवें भाव में एकाकी या अशुभ क्रूर पापी या शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो, तो उस वर्ष मनुष्य को अनेक प्रकार के रोग दवा लेते हैं। सिर, पेट, नेत्र में पीड़ा होती है, चित्त मलिन तथा मानसिक वेदना होती है। मन में उद्विग्नता, स्त्री से झगड़ा तथा शत्रुओं से विवाद तथा मातृ-पक्ष से कलह रहता है। वीमारी पर खर्च अधिक होता है। धन-धर्म-धान्य में कमी रहती है और शुभ, मित्र ग्रहों के दृष्ट या युक्त होने पर दुःखों में न्यूनता हो जाती है और शत्रु दवे रहते हैं।

द्वादश भावगत चन्द्र शुभाशुभ फल

लग्नगत चन्द्र फल—जिस वर्ष चन्द्र प्रथम भाव गत, क्रूर, पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो या एकाकी वैठा हो, तो उस वर्ष मनुष्य को अनेक प्रकार से विकलता; चित्त में चंचलता, जुकाम, कफ, खाँसी, ज्वर, शरीर में पीड़ा, जल से भय, प्रेम में विफलता तथा काम-शक्ति प्रवल, धातुसम्वन्धी रोगों पर अधिक खर्च होता है। शुभ, मित्र दृष्ट युक्त होने पर कष्टों में कमी हो जाती है।

द्वितीयगत चन्द्र फल—जिस वर्ष चन्द्र द्वितीय भाव में एकाकी या क्रूर पाप ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो, तो मनुष्य को नेत्र-पीड़ा, वायुविकार होता

है और शुभ मित्र ग्रहों से युक्त या दृष्ट होने पर मनुष्य को धन-धान्य-धर्म की प्राप्ति, प्रतिष्ठा में वृद्धि, मित्रों से लाभ, राज्य से उन्नति, परिवार से सुख तथा शत्रुओं का नाश होता है।

तृतीयगत चन्द्र फल—जिस वर्ष चन्द्र तृतीय भाव में एकाकी या पाप क्रूर ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो उस मनुष्य को उद्योग में शिथिलता, भ्रातृ-कष्ट तथा नजले की बीमारी होती है और यदि शुभ मित्र ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो पराक्रम द्वारा कृषि-व्यापार से लाभ, पुण्य-प्रतिष्ठा में वृद्धि तथा भाइयों से सुख मिलता है। गुप्त धन प्राप्ति से सुख मिलता है।

चतुर्थगत चन्द्र फल—जिस वर्ष चन्द्र चौथे घर में एकाकी या पाप क्रूर ग्रह राहु केतु से युक्त या दृष्ट बैठा हो, तो मनुष्य के पेट में दर्द, राज्य से भय, स्थान-परिवर्तन आदि होते हैं और शुभ युक्त तथा दृष्ट होने पर मनुष्य को उच्च पदाधिकार, उन्नति, मुकदमें के विजय, मातृ, स्त्री, कृषि, भूमि से सुख होता है। श्वेत वस्तुओं के व्यापार से लाभ तथा शत्रुओं का ह्रास होता है।

पंचमगत चन्द्र फल—जिस वर्ष चन्द्र पाँचवें भाव में एकाकी या पाप क्रूर ग्रह युक्त तथा दृष्ट हो, तो मनुष्य की बुद्धि अस्थिर, चित्त चंचल, सन्तान को पीड़ा तथा पुत्रीजन्म-योग बनता है। यदि शुभ दृष्ट या शुभ युक्त हो, तो बुद्धि का विकास, परीक्षा में पास, राज्य से लाभ, पुत्र-सुख, मुकदमे में शत्रु से जीत होती है।

षष्ठगत चन्द्र फल—जिस वर्ष चन्द्र छठे भाव में एकाकी या पाप क्रूर ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो उस मनुष्य को शत्रुओं से विवाद-झगड़ा तथा पराजय होती है। नेत्र में रोग, शरीर में विकलता, व्यर्थ का खर्च, मन में अज्ञात चिन्ता, स्त्री को रोग होता है और शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त होने पर प्रत्येक पातक की पीड़ा में न्यूनता रहती है। मानसिक चिन्ता कम होती है।

सप्तमगत चन्द्र फल—जिस वर्ष चन्द्र सातवें घर में एकाकी या पाप-क्रूर-ग्रह युक्त तथा दृष्ट हो, तो मनुष्य को स्त्रीचिन्ता, वात-कफ पीड़ा, नजला

जुकाम, शीतज्वर, पेट में दर्द आदि कितने ही रोग होते हैं और शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त होने पर धन-धान्य का लाभ, दूध-दही, फलों के रस खाने-पीने को मिलते हैं। नवयुवकों को युवति-प्रेम प्राप्त होता है।

अष्टमगत चन्द्र फल—जिस वर्ष चन्द्र आठवें घर में एकाकी या पाप क्रूर ग्रह युक्त अथवा दृष्ट बैठा हो, तो उस वर्ष मनुष्य को नेत्र-रोग, जल से भय, जन-विवाद, उदर-पीड़ा, गुप्तांग-रोग, धातु-क्षीणता, वमन, धन, धर्म का ह्रास, नजला-जुकाम, खांसी, नेत्रविकार, अंग-भंग, व्यापार में हानि तथा मरणासन्न बीमारी तक होती है और अपवाद से कलंक लगता है। शुभ ग्रह दृष्ट या युक्त होने पर मनुष्य को अत्यधिक कष्ट से कुछ त्राण मिलता है। जल-भय रहता ही है।

नवमगत चन्द्र फल—जिस वर्ष चन्द्र नवम घर में पाप क्रूर ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, उस वर्ष मनुष्य को भाग्योदय-सम्बन्धी कई अड़चनें आती हैं। उद्योग बड़े ही परिश्रम से सफल होता है। समय अधिकतर निराशामय व्यतीत होता है। विपरीत इसके एकाकी, चन्द्र, शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त होने पर या स्वगृही अथवा उच्च का होने पर मनुष्य के भाग्योदय में सहायक होता है, व्यापार में लाभ तथा पदोन्नति करता है। शत्रुओं का नाश करके घर में खुशी प्रदान करता है। भोजन स्वच्छ और साफ मिलते हैं। स्वास्थ्य सुन्दर रहता है। पुण्यकार्य भी खूब होते हैं।

दशमगत चन्द्र फल—जिस वर्ष चन्द्र दसवें घर में पाप तथा क्रूर ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट होता है, उस वर्ष मनुष्य को अशुभ यात्रा का दुष्परिणाम भोगना पड़ता है, ऑफीसरों से अनबन होने के कारण उन्नति में अड़चन पड़ती है। यदि पूर्ण चन्द्र निष्पाप शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो, तो प्रत्येक प्रकार का सुख प्राप्त होता है, यश, प्रतिष्ठा बढ़ती है, धर्मकर्म होते हैं। यदि चन्द्र उच्च या स्वगृही हो और गुरु दृष्ट हो, तो नौकरी में पदोन्नति अवश्य ही होती है। शत्रुनाश, शुभ तीर्थयात्रा, धन-धान्य की वृद्धि के साथ-साथ घर में खुशी भी होती है। श्वेत वस्तुओं का लाभ होता है।

एकादशगत चन्द्र फल—जिस वर्ष चन्द्र ग्यारहवें भाव में पाप ग्रहों से (राहु-केतु) युक्त या दृष्ट या क्रूर ग्रहों के साथ हो, तो बुद्धि का ह्रास, व्यापार में हानि तथा पुत्री को जन्म देता है। इसके प्रतिकूल शुभ ग्रहों से दृष्ट अथवा युक्त होने पर मनुष्य को सोने-चाँदी, श्वेत वस्त्रादि के क्रय-विक्रय से विशेष लाभ होता है। नौकरी में पद-उन्नति तथा सौख्य प्राप्त होता है। यश की प्राप्ति, घर में खुशी, पुण्यकार्य अनेक उत्सवों के साथ स्वजनों में कीर्ति होती है। शत्रु-नाश होता है।

द्वादशगत चन्द्र फल—जिस वर्ष चन्द्रमा बारहवें भाव में एकाकी अथवा पाप–क्रूर ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो, तो उस वर्ष मनुष्य को अत्यधिक खर्च के कारण कर्ज हो जाता है। शरीर में पीड़ा, नेत्र-रोग, नजला-जुकाम से सर में दर्द, पेट में वायुगोला, गुर्दे का दर्द आदि होते हैं। शत्रुओं की वृद्धि तथा बन्धुवर्ग से झगड़ा तथा कलह होता है। मन मलिन तथा चित्त उद्विग्न रहता है। ४,६,८,१२ में चन्द्रमा शुभ फलदायक नहीं होता। यदि तृतीयेश होकर चर राशि का हो, तो सफर में खर्च कराता है, स्वयं को रोग, दिल घबराने को होता है। नव मित्रों से मेल कराता है।

द्वादश भावगत मंगल शुभाशुभ फल

लग्नगत मंगल फल—जिस वर्ष मंगल प्रथम-भावगत एकाकी अथवा पाप-क्रूर ग्रहों से युक्त था दृष्ट हो, तो उस वर्ष मनुष्य को वात-पित्त, रक्तविकार, रक्तचाप, अर्श, खूनी आँव की पेचिश में से कोई न कोई रोग फोड़े फुंसियों के रूप में अवश्य ही होता है। पेट में दर्द, नेत्र सिर दर्द, ज्वर, अग्नि तथा शस्त्राघातभय रहता है। शत्रु बढ़ते हैं, स्वास्थ्य खराब रहता है। स्त्री को कष्ट होता है। यदि शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो उपर्युक्त बीमारियों में कमी होकर कामवासना बढ़ती है।

द्वितीयगत मंगल फल—जिस वर्ष मंगल दूसरे भाव में एकाकी, अथवा पाप-क्रूर तथा शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो, तो उस वर्ष मनुष्य को सिर-नेत्र-पीड़ा, पुलिस-भय, गर्म भोजन खाने को मिलता है, बन्धुओं से विरोध,

कुटुम्ब से कलह, भाग्य में रुकावट, धन-धान्य-क्षय, विद्या में अपयश, मातृ-कष्ट, शोक, मोह पीड़ा का जोर, अग्नि, सर्प विषादि भय होता है और यदि शुभ ग्रहों में गुरु से दृष्ट या युक्त हो, तो उपर्युक्त अशुभ फलों में बहुत कुछ कमी हो जाती है, किन्तु स्त्री-कष्ट अवश्य होता है।

तृतीयगत मंगल फल—जिस वर्ष मंगल तीसरे घर में एकाकी अथवा पाप-क्रूर शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो उस वर्ष मनुष्य के उद्योग-पराक्रम का ह्रास, भाइयों को पीड़ा, शरीर को कष्ट, तथा धन-धान्य की हानि होती है। किन्तु जब मंगल शुभ ग्रहों से, गुरु से युक्त अथवा दृष्ट होता है, तो राज्य, मित्र-पक्ष से धन का लाभ, सवारी-सुख, शत्रुओं का नाश, मुकदमें में जीत होती है।

चतुर्थगत मंगल फल—जिस वर्ष मंगल चौथे घर में एकाकी अथवा पाप क्रूर-शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो, तो माता को कष्ट, अपनी गृहस्थी को पीड़ा, अग्नि, शस्त्र से घाव, पशुओं की हानि, वाहन-हानि, कृषि भूमि का नुकसान, चित्त में क्लेश, मन में अशान्ति तथा व्यापार में हानि होती है, जीवन भार हो जाता है, रक्त-विकार अर्शादि रोगों का डर रहता है। किन्तु शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त होने पर इन अशुभ फलों में बहुत कुछ शान्ति आ जाती है। जीवन भार नहीं होता।

पंचमगत मंगल फल—जिस वर्ष मंगल पाँचवें भाव में एकाकी अथवा पाप-क्रूर तथा शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो, तो मनुष्य को बुद्धि का ह्रास होने के कारण चित्त में विकलता, मन में क्षोभ, पेट में दर्द, अर्श, गुप्त रोग, अण्डकोष-वृद्धि, अग्नि-शस्त्र से घात, शत्रुओं से विवाद, पुत्र को कष्ट होता है। किन्तु शुभ ग्रहों के योग तथा दृष्ट होने से इन अशुभ फलों में बहुत कुछ शान्ति हो जाती है।

षष्ठगत मंगल फल—जिस वर्ष मंगल छठे भाव में एकाकी या अशुभ पापी-क्रूर ग्रहों से दृष्ट या युक्त बैठा हो, तो शत्रुओं का नाश कर मुकदमे में जीत कराता है। उच्च या स्वग्रही मंगल राज्य से लाभ, सवारी-सुख, इष्ट

मित्रों से सम्मान प्रदान कराता है। स्त्रियों से सुख होता है। तांबे के, लाल रंग के व्यापार से लाभ होता है। शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट होने पर कोई विशेष लाभ नहीं होता, किन्तु बुद्धि स्थिर रहती है।

सप्तमगत मंगल फल—जिस वर्ष मंगल सातवें भाव में एकाकी पाप, क्रूर शत्रुग्रहों से दृष्ट या युक्त हो, तो मनुष्य की स्त्री को अनेक रोग, शत्रु-भय, लोगों से वाद-विवाद, कलह, शरीर-कष्ट, हृदय में संताप, यात्रा में तकलीफ होती है। यदि शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो मनुष्य की वेदना में कुछ न्यूनता अवश्य हो जाती है।

अष्टम मंगल फल—जिस वर्ष मंगल आठवें घर में एकाकी अथवा पाप क्रूर-ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो मनुष्य को रक्त-विकार, फोड़ा, फुन्सी, खुजली, अर्श, एक्जीमा, दाद आदि रोग होते हैं। शस्त्रघात, धन-धान्य की कमी, चित्त में व्यग्रता, अनेक गुप्त चिन्तायें तथा स्त्री को कष्ट होता है। यदि मंगल शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो, तो सन्ताप में बहुत कुछ कमी हो जाती है।

नवमगत मंगल फल—जिस वर्ष मंगल नवें स्थान पर एकाकी अथवा अन्य पापी-क्रूर-शत्रु ग्रहों के साथ दृष्ट या युक्त हो, तो उस वर्ष मनुष्य के भाग्योदय में देर, पराक्रम में शिथिलता, माता को कष्ट, खेती आदि में हानि होती है। किन्तु शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त होने पर शीघ्र अपनी दशा में शुभाशुभ फल होता है। धन-धान्य से पूर्ण भाग्योदय, धर्म-कर्म में वृद्धि, मान-प्रतिष्ठा-यश-बड़ाई, वाहन (साईकिल मोटर आदि), मित्र-पुत्र पक्ष से धनादि लाभ होता है। रक्त वस्त्रादि व्यापार से बहुत लाभ होता है।

दशमगत मंगल फल—जिस वर्ष मंगल दसवें घर में एकाकी या पाप क्रूर-शत्रु ग्रहों में युक्त या दृष्ट बैठा हो, तो मनुष्य को विशेष शुभ फल प्राप्त नहीं होता, शरीर में रोग, मन में उत्तेजना, सन्तान-कष्ट होता है। यदि शुभ ग्रहों से दृष्ट अथवा युक्त हो, तो मनुष्य को राज्य से लाभ, उन्नति और यदि उच्च या स्वग्रही हो, तो पुण्य-कार्य, तीर्थ-यात्रा, धन-धान्य की प्राप्ति, शरीर-सुख, व्यायाम की सुविधा, कुटुम्ब से सुख मिलता है। शत्रुओं का नाश होता है।

एकादशगत मंगल फल—जिस वर्ष मंगल ग्यारहवें स्थान पर पाप क्रूर, तथा शत्रु ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो, तो मनुष्य को धन की कमी, सन्तान-कष्ट, कुटुम्ब को रोग, यात्रा में अड़चन, बड़े भाई से कलह होता है, किन्तु शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट होने पर मित्र-मिलाप, बन्धु-सुख, पदोन्नति, धन-लाभ, यश में वृद्धि, व्यापार में लाभ होता है। सवारी-गृह-सुख, सोना-प्रवाल-वस्त्रादि की प्राप्ति तथा सन्तान-सुख मिलता है।

द्वादशगत मंगल फल—जिस वर्ष मंगल बारहवें घर में पाप-क्रूर-शत्रु ग्रहों से दृ॰ युक्त या शत्रु-राशि पर बैठा हो, तो सिर, नेत्र पीड़ा, पुलिस-भय (चालानादि सवारी में होना) कान में दर्द, स्त्री तथा निजी शरीर में दर्द-कष्ट, भाई बन्धुओं से विरोध, धन का बीमारी में व्यय होता है। प्रतिकूल इसके यदि शुभ मित्र ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो, तो शत्रुनाश, पराक्रम से उद्योग बनता है और अनेक कष्टों में न्यूनता हो जाती है।

द्वादश भावगत बुध शुभाशुभ फल

लग्नगत बुध फल—जिस वर्ष बुध प्रथम भाव में पाप-क्रूर तथा शत्रुग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो, तो घर में कलह, पिता-पुत्र की अनबन, वायु-रोग तथा भोजन सुखकर नहीं मिलते। प्रतिकूल इसके जब बुध शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त होता है, तो मनुष्य की बुद्धि का विकास होता है, जिसकी मदद से वह धन-धान्य, जय, पदोन्नति को प्राप्त होकर स्त्री-बच्चों के सुख से सुखी होता है। इष्ट मित्रों से मिलाप तथा शत्रु-नाश होता है।

द्वितीयगत बुध फल—जिस वर्ष बुध दूसरे घर में, पाप क्रूर तथा शत्रु ग्रहों से युक्त तथा दृष्ट होता है, तो कुटुम्ब से झगड़ा, धन में कमी, नजला-जुकाम तथा पीलिया रोग होता है। स्वगृही या उच्च का होकर शुभग्रहों से दृष्ट या युक्त होने पर विशेष फल देता है। इष्ट मित्रों से मेल-मिलाप द्वारा धन की प्राप्ति, मान, बड़ाई, कीर्ति लाभ होता है। पुस्तकों की प्राप्ति तथा शत्रु-नाश होता है।

तृतीयगत बुध फल—जिस वर्ष बुध तीसरे घर में पाप-क्रूर तथा शत्रुग्रहों

से युक्त अथवा दृष्ट हो, तो मनुष्य के पराक्रम का ह्रास, उद्योग में कमी तथा व्यापार में हानि होती है और यदि शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट अथवा एकाकी ही हो, तो पराक्रम द्वारा शत्रुओं का पराभव, चित्त में शान्ति तथा मानसिक कष्टों का नाश होकर स्त्री-पुत्रों का सुख, धन-यश-मान-प्रतिष्ठा का लाभ होता है। पीली वस्तुओं के व्यापार से लाभ तथा सुख की प्राप्ति होती है।

चतुर्थगत बुध फल—जिस वर्ष बुध चौथे स्थान में पाप-क्रूर तथा शत्रुग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो, तो मातृकष्ट, स्थानपरिवर्तन, ऑफीसरों से अनबन तथा प्रेम में विफलता होती है और जब शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो, तो मनुष्य को इष्ट मित्रों से मिलाप, मातृ-सुख, राज्य-सुख, भूमि, गो, कृषि, स्त्री, वाहन, सुवर्ण आदि द्रव्यों से लाभ होता है, अनेक सुख मिलते हैं।

पंचमगत बुध फल—जिस वर्ष बुध पांचवें भाव में पाप-क्रूर-शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो, तो मनुष्य को सन्ततिकष्ट, परीक्षार्थी का परीक्षा-परिणाम अशुभ, मन सन्तप्त रहता है और यदि बुध शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो सन्तान-सुख, परीक्षा में उत्तीर्णता, उद्योग में सफलता, धन-धान्य-नौकर-वाहनसुख, इष्ट मित्रों से मिलाप, नवीन विद्या का सहयोग तथा लाभ होता है। प्रत्येक प्रकार से सुख मिलता है।

षष्ठगत बुध फल—जिस वर्ष बुध छठे भाव में अशुभ पाप ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो, तो शत्रुओं से नित्य विवाद, स्त्रियों से दुःख, चित्त में विकलता, कफ, वायु आदि रोग, धन का अधिक खर्च होता है और शरीर अस्वस्थ रहता है। यदि शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट, हो तो मनुष्य की बहुत कुछ परेशानी कम हो जाती है और मनुष्य झगड़ों से निवृत्त होकर सुख और शान्ति का अनुभव करता है।

सप्तमगत बुध फल—जिस वर्ष बुध सातवें घर में पाप-क्रूर तथा शत्रु-ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो, तो मनुष्य को स्त्री-कष्ट, स्वयं को कफ-नजला खांसी तथा शरीर में दर्द रहता है और यदि शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो,

तो मनुष्य को स्त्री-सुख, विलासमय जीवन, मान-प्रतिष्ठा, सोने तथा वस्त्रों का लाभ होता है। अधिकार तथा सौख्य की प्राप्ति होती है।

अष्टमगत बुध फल—जिस वर्ष बुध आठवें घर में पाप-क्रूर तथा शत्रु ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो, तो मनुष्य को वायु-कफ-ज्वरादि से अत्यन्त कष्ट होता है, चित्त में चंचलता, आँख में पीड़ा और मन में बेचैनी रहती है। प्रतिकूल इसके यदि बुध शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो, तो मनुष्य कितने ही सन्तापों से बचकर सुख का अनुभव करता है।

नवमगत बुध फल—जिस वर्ष बुध नवें घर में पापक्रूर-शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो मनुष्य के भाग्योदय में देरी, पराक्रम में कमी तथा यात्रा में हानि रहती है और यदि यह शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो अथवा उच्च का स्वग्रही हो या राज्येश लाभेश तथा धनेश होकर नवें घर में हो, तो पदोन्नति, कुछ तरक्की, धन-धान्य, सन्तति-लाभ तथा व्यापार में लाभादि से भाग्योदय होता है। यशकीर्ति, परीक्षा पास तथा पराक्रम द्वारा उद्योग में सफलता से खुशी मिलती है।

दशमगत बुध फल—जिस वर्ष बुध दसवें स्थान में पाप-क्रूर ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो, तो मनुष्य को अशुभ फल दिखाये बिना नहीं रहता। ऑफीसरों से झगड़ा, राज्य से हानि होती है। यदि शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त उच्च या स्वग्रही, धनेश, लाभेश, पंचमेश तथा भाग्येश होकर कर्म भाव में हो, तो राज्य से निश्चय पद तथा धन-लाभ होता है, वाहन-यशकीर्ति, परीक्षा में उत्तीर्णतादि सुख मिलता है। फल-फूल, रसीले पदार्थ खाने को मिलते हैं। मनुष्य सब प्रकार से बुध दशा में प्रसन्न रहता है।

एकादशगत बुध फल—जिस वर्ष बुध एकादश भाव में एकाकी या पाप-क्रूर ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो, तो मनुष्य को धन-हानि, लड़की की प्राप्ति, परीक्षा में अनुत्तीर्णता तथा अशुभ फलदायक होता है और शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त होने पर उच्च या स्वग्रहों से दृष्ट या युक्त होने पर उच्च या स्वग्रही अथवा भाग्येश, राज्येश, धनेश तथा पंचमेश होकर बैठने पर धन-

धान्य-कीर्ति पशु-सम्पत्ति अचानक प्राप्त होने की सम्भावना रहती है। अनेक मनोरथों की सिद्धि से लाभ होता है और बुध दशागत जीवन सुख से व्यतीत होता है।

द्वादशगत बुध फल—जब बुध बारहवें भाव में पाप-क्रूर तथा शत्रु-ग्रहों के साथ बैठता या दृष्ट रहता है, तो उस वर्ष मनुष्य को कफ वायु पीड़ा, सिर आँख कान में दर्द, शत्रु की वृद्धि करता है और बीमारी में रुपया खर्च करता है। जीवन दुःखी रहता है। शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त होने पर तीर्थयात्रा, धर्म-कर्म तथा शुभ कार्यों में खर्च कराता है। शत्रुओं से विवाद तथा मुक़दमा करवाता है।

द्वादश भावगत गुरु शुभाशुभ फल

लग्नगत गुरु फल—जिस वर्ष बृहस्पति लग्न या प्रथम भाव में एक भी पाप क्रूर या शत्रु ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो, तो मनुष्य को वायु-रोग, शरीर में विकलता तथा अपनी उन्नति की चिन्ता होती है। किन्तु जब शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त होता है अथवा चन्द्रमा से वेध करता हो, तो अपनी दशा में स्त्री, पुत्र, वाहन, वस्त्र, धन-धान्य, राज्य से पदोन्नति, व्यापार में लाभ देता है, इष्ट मित्रों से मिलाप, सोना-चाँदी रक्त भूषण आदि का सुख प्रदान करता है और भाग्योदय द्वारा यशादि प्राप्त होते हैं।

द्वितीयगत गुरु फल—जिस वर्ष गुरु दूसरे घर में पाप क्रूर अथवा शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो मनुष्य को शत्रुभय, धन-हानि, कुटुम्ब से कलह, चर राशिगत यात्रा कराता है और शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट होने पर इष्ट मित्रों से मिलाप, स्त्री-बच्चों तथा राज्य से सुख दिलाता है, धर्म-कर्म में श्रद्धा बढ़ाता है, तीर्थ-यात्रा, पुण्य कार्य, कराता है, वाहन-सुख, गो दूध दही आदि तथा स्निग्ध भोजन खाने को मिलते हैं। स्वगृही तथा उच्च का बृहस्पति अवश्य ही पदोन्नति कराता है।

तृतीयगत गुरु फल—जिस वर्ष गुरु तीसरे घर में पाप क्रूर-शत्रु-ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो, तो मनुष्य के पुरुषार्थ—पराक्रम तथा उद्योग का ह्रास, भाइयों को रोग होता है। उच्च स्वगृही गुरु यदि शुभ ग्रहों से दृष्ट-युक्त

तथा चन्द्र-वेधमय हो, तो व्यापार, राज्य, स्त्री-पुत्रादि से धन-धान्य-कीर्ति का लाभ होता है और इष्ट मित्रों, बड़े भाई से मिलाप तथा लाभ होता है। पुण्य कार्य तथा अन्न-वस्त्र की कोई कमी नहीं रहती। स्वदेश में सुख देता है।

चतुर्थगत गुरु फल--जिस वर्ष गुरु चौथे भाव में पाप-क्रूर शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो मनुष्य को मातृ-पीड़ा, शनि के घर में होने से स्थान-परिवर्तन, कृषि, वाहन की हानि होती है। १-४ में शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट होने पर सुन्दर मकान, वाहन, कृषि-सुख, भूमि-लाभ, धन-धान्य में वृद्धि, रोगों से छुट्टी (सिवाय वायु-पीड़ा) होती हैं।

पंचमगत गुरु फल--जिस वर्ष गुरु पाँचवें घर में पाप-क्रूर-शत्रु ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो या वृष (२) में हो, तो मनुष्य को उस वर्ष सन्तान-पीड़ा, शरीर में विकलता, विद्या की चिन्ता, अपयश मिलता है और यदि शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त, उच्च या स्वगृही हो, तो पुत्र की प्राप्ति, नव-विद्या का लाभ, विद्या द्वारा भाग्योदय, यश-कीर्ति बड़ाई, वस्त्र, भूमि, स्वर्ण का लाभ होता है, शत्रुओं के पराभव से आनन्द होता है। जीवन सुखी रहता है।

षष्ठगत गुरु फल—जिस वर्ष गुरु छठे भाव में पाप-क्रूर ग्रहों से दृष्ट-युक्त हो, तो शत्रुओं का उत्कर्ष, नेत्ररोग, मन में बेचैनी, वायु-पीड़ा, ज्वर, पेचिस तथा अनेक रोग होते हैं। यदि शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो, तो प्रत्येक प्रकार से रक्षा होती है और किसी प्रकार का विशेष कष्ट न होकर जीवन सामान्य व्यतीत होता है।

सप्तमगत गुरु फल—जिस वर्ष गुरु सातवें घर में पाप-क्रूर तथा शत्रु ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो, तो मनुष्य की स्त्री को पीड़ा, चित्त में अशान्ति, वायु-कफ-रोग तथा मानसिक वेदना होती है। यदि शुभ ग्रहों से युक्त, दृष्ट अथवा उच्च स्वगृही हो, तो स्त्री-बच्चों का सुख, विलासितामय जीवन व्यतीत होता है। शत्रु-भय-नाश, पराक्रम-उद्योग की सफलता पर लक्ष्मी तथा वाहन की प्राप्ति होती है।

अष्टमगत गुरु फल—जिस वर्ष गुरु आठवें घर में पाप-क्रूर-शत्रु-ग्रहों से

युक्त अथवा दृष्ट बैठा हो, तो मनुष्य को ज्वर, शरीर में घाव, वमन, वायु, कफ, नजला, जुकाम, शत्रु-भय, नेत्र-कान पीड़ा, फोड़ा-फुन्सी रोग होते हैं, सभी बच्चों के कष्ट से मन विकल तथा अनेक दुःख होते हैं। विपरीत इसके शुभ ग्रहों के दृष्ट या युक्त होने पर उपर्युक्त अशुभ फलों में बहुत कुछ ह्रास आ जाता है और मनुष्य बहुत कुछ दुःखों से बच जाता है।

नवमगत गुरुफल—जिस वर्ष गुरु नवें भाव में पाप-क्रूर-शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट बैठा हो, तो मनुष्य को तीर्थादि शुभ कर्मों के करने से रोकता है, भाग्योदय में रुकावट, उद्योग में अड़चन करता है। यदि उच्च या स्वगृही गुरु शुभ या मित्र ग्रहों से दृष्ट हो, तो राज्येश, धनेश, लाभेश तथा पंचमेश होने पर विद्या का विकास, राज्य से लाभ, उच्चाधिकार, तरक्की, व्यापार से धन-लाभ, भूमि-प्राप्ति, वाहन-सुख, मातृ-सुख, इष्ट-मित्रों से मिलाप, पराक्रम से यश-कीर्ति लाभ, धर्म कर्म पुण्य कार्यों में सफलता, तीर्थ-यात्रादि शुभ कार्यों से सुख मिलता है।

दशमगत गुरुफल—जिस वर्ष गुरु दसवें स्थान में पाप-क्रूर-शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो, तो मनुष्य की पदोन्नति राज्योन्नति में रुकावट, शुभ कार्यों में देरी, शत्रु-चिन्ता तथा शरीर में विकलता होती है। उच्च या स्वगृही अथवा भाग्येश, लाभेश, धनेश, पंचमेश, पराक्रमेश गुरु हो, तो मनुष्य को राज्य से धन-लाभ, पदोन्नति द्वारा भाग्योदय, विद्या के पराक्रम से धन-धान्य लाभ, मांगलिक कार्यों में उत्साह, वाहन-वस्त्रादि का सुख, शुभ चन्द्र वेध होने पर अवश्य ही उन्नति होती है।

एकादशगत गुरुफल—जिस वर्ष गुरु ग्यारहवें घर में पाप-क्रूर शत्रु-ग्रहों से दृष्ट या युक्त होता है, तो धन-धान्य की हानि, स्त्री बच्चों को कष्ट, शत्रुओं की वृद्धि तथा विद्या की हानि होती है। इसके प्रतिकूल उच्च स्वगृही, धनेश, पंचमेश, भाग्येश, राज्येश होने पर शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त होने पर मनुष्य को पुत्रादि, राज्यादि से धन-धान्य तथा वाहन यश-कीर्ति-सुख मिलता है, चिन्तायें कम होती हैं, स्वास्थ्य अच्छा रहता है और सुख मिलता है।

द्वादशगत गुरुफल—जिस वर्ष गुरु बारहवें घर में पाप-क्रूर-शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो मनुष्य को वायु-कफ, नजला-जुकाम, सिर नेत्र-कान-पीड़ा, शत्रु-भय, जनापवाद, उन्नति में बाधा, शोक-क्लेश तथा अनेक दुःख होते हैं। यदि पराक्रमेश होकर स्वगृही गुरु १२ में हो, तो अवश्य ही तीर्थयात्रादि शुभ कार्यों में धन खर्च होता है या अन्नादि के दान का शुभ कार्य होता है।

द्वादश भावगत शुक्र शुभाशुभ फल

लग्नगत शुक्रफल—जिस वर्ष शुक्र प्रथम भाव में पाप-क्रूर-शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो, तो मनुष्य को जल से भय, नजला, जुकाम, ज्वर, कामोद्दीपन तथा स्त्रीकष्ट होता है। प्रतिकूल इसके जब शुक्र स्वगृही, उच्च का होकर शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो, तो मनुष्य को आमोद-प्रमोदमय जीवन व्यतीत करने का, स्त्री-सुख, सजावट को फर्नीचर, गान-वाद्य का सामान, यश-मान-प्रतिष्ठा, घड़ी-अँगूठी आदि पुस्तकों का लाभ होता है।

द्वितीयगत शुक्रफल—जिस वर्ष शुक्र दूसरे घर में पाप-क्रूर-शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, अथवा स्वगृही हो, तो मनुष्य धातुक्षीणता, कामवासना द्वारा मृत्युतुल्य कष्ट पाता है, चित्त में अशान्ति, शरीर में बेचैनी तथा मन में उद्विग्नता रहती है। एकाकी अथवा स्वगृही शुभग्रह युक्त या दृष्ट होने से मनुष्य को अन्न-वस्त्र, दूध-दही, फल मिष्टान्नादि से सुख मिलता है, मित्र-मिलाप, स्त्रीसुख, कुटुम्ब-सहयोग, धन-धान्य, सवारी, शृङ्गारी वस्तुएं (घड़ी, अँगूठी, छड़ी बाजा आदि) प्राप्त होती हैं, घर में सुख और शान्ति रहती है।

तृतीयगत शुक्रफल—जिस वर्ष शुक्र तीसरे स्थान में पाप-क्रूर-शत्रु ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो, तो भ्रातृ-कष्ट, उद्योग में हानि, काम की प्रबलता, वायु-रोग, शरीर अस्वस्थ रहता है। यदि निर्दोष शुक्र, शुभ मित्र ग्रहों से युक्त हो, तो मनुष्य को सहोदर-सुख, इष्ट मित्रों से मिलाप, धन-धान्य का लाभ, कीर्ति, यश-मान, प्रतिष्ठा में वृद्धि, पराक्रम से उद्योग सफल, नव स्त्रियों से वार्ता तथा परोपकार-कार्य होते हैं।

चतुर्थगत शुक्र फल—जिस वर्ष शुक्र चौथे घर में पाप, क्रूर, शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो यात्रा, स्थान-परिवर्तन, मातृकष्ट, घर में कलह, वाहनादि से चोट-भय. अधिकारी-वर्ग से अनवन होती है। यदि शुक्र उच्च या स्वगृही शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो, तो मनुष्य को मातृ-भूमि, मकान, वाहन, कृषि, दूध, दही फलादि का सुख होता है। वस्त्र, चाँदी, श्वेत प्रस्तरादि व्यापार से लाभ होता है। कामशक्ति तथा विलासिता बढ़ती है, जीवन सुखी रहता है।

पंचमगत शुक्रफल—जिस वर्ष शुक्र पांचवें घर में पाप-क्रूर-शत्रु ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो, तो मनुष्य का बन्धुओं, शत्रुओं से विवाद, वायु-कफ, नजला-जुकाम से पीड़ा, चित्त में अशान्ति, शरीर में रोग, नेत्र, कान, सिर, पेट में दर्द तथा धातु-सम्बन्धी अनेक गुप्त चिन्ताएँ रहती है। शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त होने पर अनेक चिन्ताओं में कमी, शुभ कार्यों में खर्च, मामा से सुख मिलता है और अनेक समस्याओं का निवारण होता है।

सप्तमगत शुक्र फल—जिस वर्ष शुक्र सातवें घर में पाप-क्रूर तथा शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो, तो मनुष्य को अतुल कामवासना, स्त्री-कष्ट, वायु-रोग तथा मन में विलासिता की बेचैनी होती है और जब उच्च या स्वगृही एकाकी अथवा शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो, तो मनुष्य को स्त्री-सुख, धन-धान्य-लाभ, सोने, वस्त्रादि व्यापार से लाभ तथा पराक्रम और उद्योग से अनेक कार्यों में सफलता से सुख मिलता है।

अष्टमगत शुक्रफल—जिस वर्ष शुक्र आठवें स्थान में पाप-क्रूर तथा शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो और साथ ही द्वितीयेश होकर बैठे, तो जल से भय, वायु, नजला, जुकाम, जीर्ण ज्वरादि से मृत्युतुल्य कष्ट होता है। यदि सप्तमेश होकर ८वें में हो, तो अपनी निकट सम्बन्धी से कलंकित होकर वदनामी आती है, शरीर में वेचैनी, कान-आँख में दर्द, शत्रुओं से विवाद होता है। जब शुक्र शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त होता है, तो धर्मकार्यों में खर्च, मातृसुख, इष्ट-मित्रों से मिलाप, वाहन-चर्चा होती है।

नवमगत शुक्र फल—जिस वर्ष शुक्र नवें घर में पाप-क्रूर-शत्रु ग्रहों से

युक्त अथवा दृष्ट हो, तो मनुष्य को हास्य-विलास, कामपीड़ा तथा लालच, वायुरोग, नजला होता है और यदि शुक्र उच्च, स्वक्षेत्री, मित्र के घर का शुभ दृष्ट या युक्त हो अथवा कर्मेश, धनेश, लाभेश होकर बैठा हो, तो निश्चय-पूर्वक धन-धान्य, राज्य-सुख, पद-उन्नति, स्वच्छ वस्त्र, दूध-दही, फल, रसीले पदार्थ खाने को मिलते हैं। भाग्योदय होता है। चांदी, हीरे आदि के व्यापार से लाभ होता है, सजावट का सामान खरीदा जाता है। नाच-गान, रंग-विलास में जी लगता है।

दशमगत शुक्र फल—किस वर्ष शुक्र दसवें स्थान में पाप-क्रूर-शत्रु ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो, तो मनुष्य की अपने ऑफीसरों से अनबन, स्थान-परिवर्तन, मातृकष्ट आदि होते हैं। किन्तु जब स्वगृही, उच्च तथा मित्र के घर का हो और साथ ही शुभ दृष्ट या युक्त हो, तो राज्य से लाभ, पदोन्नति, व्यापार से लाभ, इष्ट मित्रों से मुलाकात, पराक्रम से उद्योग बनता है। भूमि, धन-धान्य, मकान आदि का लाभ, वाहन-सुख, घड़ी अंगूठी, श्वेत वस्त्रादि, फर्नीचर का लाभ होता है। अनेक भोग प्राप्त होते हैं। घर में सुख और शान्ति का निवास रहता है।

एकादश गत शुक्र फल—जिस वर्ष शुक्र ग्यारहवें घर में पाप, क्रूर, शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट होता है, तो सन्तान-कष्ट, व्यापार में हानि होती है और जब उच्च स्वगृही, या राज्येश भाग्येश, धनेश पंचमेश शुभ ग्रहों से दृष्ट युक्त हो तो सन्तान-सुख, परीक्षा पास, व्यापार से लाभ, श्वेत वस्त्र, फल, दूध दही, जय, हर्ष, सुख बड़े भाई, इष्ट मित्रों से सुख, ससुराल या स्त्री के नव सम्बन्ध से लाभ तथा खुशी होती है।

द्वादशगत शुक्र फल—जिस वर्ष शुक्र बारहवें घर में पाप-क्रूर-शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो मनुष्य की बीमारी पर दाँत, कान, आँख, श्वास, पेटादि में पीड़ा के कारण खर्च होता है, मामा के घर भी दुःख होता है, शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट होने पर इतना अनिष्ट फल नहीं होता और मनुष्य दुःख पीड़ा में भी शान्ति से दिन व्यतीत करता है।

द्वादश भाव गत शनि शुभाशुभ फल

लग्नगत शनि फल—जिस वर्ष शनि प्रथम भाव में एकाकी या पापी, क्रूर, शत्रु ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो, तो मनुष्य को वायु, पित्त, ज्वरादि रोग, पराक्रम का ह्रास, राज्य से अनबन, बुद्धि का ह्रास, भय, फोड़ा, फुंसियाँ, जनापवाद, स्त्री को कष्ट से दुःख मिलता है। उद्योग में हानि होती है। इसके प्रतिकूल शुभ ग्रहों से दृष्ट, युक्त होने पर उपर्युक्त विपत्तियों में न्यूनता आ जाती है और मनुष्य इतना अधिक दुखी नहीं होता।

द्वितीयगत शनि फल—जिस वर्ष शनि दूसरे घर में एकाकी या पाप, क्रूर, शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो, तो मनुष्य को अनेक रोग होते हैं, आँख, कान, शरीर में पीड़ा, चित्त में विकलता, वात, कफ की वृद्धि, बड़े भाई से अनबन, धन-धान्य में कमी, बन्धुविरोध, स्थानपरिवर्तन, शत्रु की वृद्धि होती है। शुभ ग्रहों के योग से तथा दृष्टिगत होने से अनेक बाधाओं में न्यूनता आ जाती है।

तृतीयगत शनि फल—जिस वर्ष शनि तीसरे स्थान में एकाकी या पाप-क्रूर-शत्रु ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो, तो मनुष्य को भाइयों से हानि तथा बन्धुओं को रोग-पीड़ा, विद्या में हानि, परीक्षार्थी अनुत्तीर्ण होते हैं। मित्र शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त होने पर यात्रा में खर्च, राज्य से लाभ, शत्रुओं पर विजय, पराक्रम में वृद्धि, उद्योग में सफलता द्वारा धन-धान्य की प्राप्ति, भाइयों का सुख प्राप्त होता हैं।

चतुर्थगत शनि फल—जिस वर्ष शनि चोथे घर में एकाकी या पाप-क्रूर-शत्रु ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो, तो मनुष्य को मातृ-पक्ष में रोग की वृद्धि, अपने शरीर में वायु-प्रकोप से पीड़ा, स्थानहानि, चौपायों से कष्ट, ऑफीसरों से अनबन तथा गुप्त चिन्ताओं द्वारा स्वाथ्य में नर्मी रहती है। शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त होने से उपर्युक्त दोषों का ह्रास होने से शत्रु-भय का नाश होता है। पेट-पीड़ा, चित्त की विकलता आदि में भी न्यूनता रहती है।

पंचमगत शनि फल—जिस वर्ष शनि पाँचवें भाव में एकाकी या पाप-क्रूर-शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो, तो मनुष्य को सन्तानचिन्ता, पुत्र को कष्ट, स्त्री के, अपने पेट में दर्द, वायुविकार, चित्त में सन्ताप, विद्या में ह्रास तथा

राज्य-पक्ष से हानि और भी बहुत सी चिन्तायें दबाये रहती हैं। इसके विपरीत यदि शनि शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो, तो मनुष्य को अनेक व्यथाओं से बचाकर सुख देता है, किसी म्लेच्छ विद्या का उद्योग होता है, धनहानि होती है।

षष्ठगत शनि फल—जिस वर्ष शनि छठे स्थान में उच्च, स्वगृही या मित्रक्षेत्री होता है, तो मनुष्य को मुकदमे में विजय, शत्रुओं का नाश, रोगों की निवृत्ति, पदोन्नति, व्यापार से लाभ, धन-धान्य पूर्ण होकर मनुष्य निरोग होने के कारण सुखी रहता है, यश, कीर्ति तथा प्रतिष्ठा का प्रसार होता है। शत्रु, क्रूर ग्रहों के योग या दृष्टि होने से शुभ फल का ह्रास और मित्र, शुभ ग्रहों के सहयोग से शुभ फलों में वृद्धि होकर सुख मिलता है।

सप्तमगत शनि फल—जिस वर्ष शनि सातवें स्थान में एकाकी या पाप, क्रूर तथा शत्रु ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो, तो मनुष्य की स्त्री के पेट में वायु-गोले का दर्द, धन-धान्य, कृषि, भूमि, स्थानपरिवर्तन आदि से हानि, मिथ्या अपवाद, उदर में स्वयं के पीड़ा, इष्ट मित्रों, माता से अनवन, अनेक क्लेशों से कष्ट होता हैं। यात्रा में दुःख मिलता है। किन्तु शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट होने पर उपर्युक्त दूषित प्रभाव कम हो जाता है। किन्तु भाग्य में रुकावट बनी रहती है।

अष्टमगत शनि फल—जिस वर्ष शनि आठवें भाव में एकाकी या पाप, क्रूर तथा शत्रु ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो, तो शत्रुओं द्वारा मानहानि, धन-धान्य क्षय, वायु-कफ पीड़ा, मिथ्या अपवाद, ज्वर तथा पदोन्नति में रुकावट बनी रहती है। विद्या का ह्रास, परीक्षार्थी फेल होते हैं, शरीर में ताप, व्यर्थ क्रोध आता है। चित्त में अशान्ति, मन में असन्तोष बना रहता है। २-७ घरों का स्वामी होकर अष्टम में होने पर मृत्युतुल्य कष्ट होता है। शुभ ग्रहों से युक्त, दृष्ट होने पर बहुत कुछ शान्ति रहती है।

नवमगत शनि फल—जिस वर्ष शनि नवम घर में पाप-क्रूर तथा शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो, तो मनुष्य की भाग्योन्नति में रुकावट, व्यापार में हानि, शत्रु का नाश, बड़े भाई को कष्ट होता है और यदि शनि, १०-११-२

इन स्थानों का स्वामी होकर अथवा उच्च या स्वगृही हो, तो अवश्य ही भाग्योन्नति, व्यापार में लाभ, भाई से सुख, लक्ष्मी की प्राप्ति से सुख प्रदान करता है।

दशमगत शनि फल—जिस वर्ष शनि दसवें स्थान में एकाकी या पाप-क्रूर तथा शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो, तो पिता-माता से अनबन, कृषि-वाहन से नुकसान, स्त्री-पीड़ा, स्वयं के पेट में वायुगोले का दर्द होता है। यदि शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो और भाग्येश या लाभेश होकर स्वगृही हो, धनेश या पराक्रमेश होकर उच्च का दशम में हो, तो राज्य से लाभ, पदोन्नति, शुभकर्म, तीर्थ-यात्रा में खर्च, लोहे के क्रय-विक्रय से लाभ तथा कृष्ण वस्त्र से लाभ होता है।

एकादशगत शनि फल—जिस वर्ष शनि ग्यारहवें स्थान में एकाकी अथवा पाप, क्रूर तथा शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो, तो मनुष्य के शरीर में पीड़ा, वायु का कष्ट, तथा बीमार रहता है, भाई तथा सन्तान को कष्ट होता है और जब स्वक्षेत्री उच्च का हो, तो राज्य से लाभ, सन्तान-सुख, वाहन का सुख, साइकलादि, मोटरादि का खरीदना, शुभ दृष्ट या युक्त होने पर वस्त्र, भूमि, नवीन गृहादि का सुख मिलता है, स्थान-परिवर्तन, यदि चर राशि गत शनि हो, तो मानव-जीवन सुखी होता है।

द्वादशगत शनि फल—जिस वर्ष शनि बारहवें भाव में पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो मनुष्य के शरीर में विकलता, आँख, कान, नाक दाँत में पीड़ा, मानसिक चिन्ता, मन में क्षोभ, व्यर्थ का खर्च होता है। यदि शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो या लग्नेश और द्वितीयेश होकर गुरु के साथ द्वादश में हो, तो शुभ तीर्थ-यात्रा में सुख मिलता है, किन्तु यात्रा में देर होती है, जिसका परिणाम शुभ ही होता है।

द्वादश भाव गत राहु शुभाशुभ फल

लग्नगत राहु फल—जिस वर्ष राहु प्रथम भाव में बैठा हो, तो मनुष्य तथा उसकी स्त्री को शरीर-पीड़ा, पेट-दर्द, आँख, कान में वेदना होती है। मन में अशान्ति, चित्त में क्षोभ, राज्य-भय, स्वजनों में अपकीर्ति, परजनों से विवाद, मानहानि, असन्तोष तथा व्यग्रता के कारण मन दुःखी रहता है। शुभ

ग्रहों से दृष्ट या युक्त होने पर यह अशुभ प्रभाव कुछ हल्का हो जाता है। सूर्य चन्द्र के साथ अथवा उनकी राशि पर होने से दुष्ट प्रभाव और गुरुतर हो जाता है।

द्वितीयगत राहु फल—जिस वर्ष राहु दूसरे घर में पाप-क्रूर-शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो अथवा शत्रु की राशि में हो, तो आँख, कान में पीड़ा, सिर में चक्कर, धन की हानि, कोई बीमारी, उदर में रोग होता है। अपने उच्च या स्वगृह में किसी शुभ ग्रह से दृष्ट या युक्त होने पर मनुष्य को राज्य से लाभ तथा काष्ठादि के व्यापार, जंगलात के ठेके से बहुत लाभ होता है, किन्तु वह लाभ तुरन्त न होकर शनैः-शनैः होता रहता है।

तृतीयगत राहु फल—जिस वर्ष राहु तीसरे स्थान में पाप-क्रूर-शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो अथवा शत्रु की राशि में हो, तो मनुष्य को मानसिक चिन्ता, शरीर-कष्ट, चित्त में बेचैनी, मन में अशान्ति रहती है, किन्तु शुभ ग्रहों से युक्त, दृष्ट, मित्र-राशि, उच्च तथा स्वगृही होने पर मनुष्य को पराक्रम द्वारा उद्योग में सफलता, यश-कीर्ति-लाभ, पदोन्नति, राज्य से लाभ, परीक्षार्थी पास, वाहनादि से सुख प्राप्त होता है। अनेक शुभ कार्य होते हैं, स्थान-परिवर्तन तथा कोई शुभ यात्रा होती है।

चतुर्थगत राहु फल—जिस वर्ष राहु चौथे घर में एकाकी अथवा शुभाशुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट बैठा हो, तो मनुष्य की माता-पिता से नहीं बनती, स्थान-भ्रष्ट होता है, कोई लम्बी यात्रा का संयोग बनता है। वाहन से घात, चोट-भय, ऑफीसरों तथा स्वबन्धुओं से विवाद होकर नुकसान रहता है। पेट में विकार, धातुक्षीणता, वायु, कफ, खाँसी, ज्वरादि से मन खिन्न रहता है। किसी अशुभ घटना या अशुभ समाचार का श्रवण होता है।

पंचमगत राहु फल—जिस वर्ष राहु पाँचवें भाव में एकाकी अथवा पाप-क्रूर शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त, शत्रुक्षेत्री भी हो, तो मनुष्य की बुद्धि का ह्रास हो जाने से अनेक प्रकार के मानसिक, शारीरिक तथा आत्मिक कष्ट होते हैं। चित्त में भ्रम, मन में अशान्ति, पेट में पीड़ा, व्यापार में हानि, भाई, सन्तान को कष्टादि होते हैं और यदि राहु उच्च, स्वक्षेत्री, मित्रक्षेत्री शुभग्रहों से दृष्ट

या युक्त हो, तो अत्यन्त शुभफल करता है, राज्य, व्यापारादि से लाभ होता है।

षष्ठगत राहु फल—जिस वर्ष राहु छठे घर में एकाकी या शुभाशुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो, तो न्यूनाधिक परापर शुभाशुभ ही फल करता है और मनुष्य को राज्य, वाहन, गौ, भूमि, स्वर्ण, काष्ठादि क्रय-विक्रय से लाभ देता है। उच्च तथा स्वगृही होने में और अधिक उन्नति होती है। धन-धान्य की प्राप्ति, दु:ख-दारिद्रय का ह्रास तथा शत्रु का नाश होता है। जीवन उस दशा में सुखी रहता है।

सप्तमगत राहु फल—जिस वर्ष राहु सातवें भाव में एकाकी अथवा पाप-क्रूर, शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो या शत्रु ग्रहों की राशियों में हो, तो मनुष्य को वात-पित्त-कफ, प्रमेहादि, गुप्तेन्द्रियों में रोग, पेड़ू में दर्द, अग्नि-विषादि से भय, उदर में विकार, स्त्री को मन्दाग्नि तथा अनेक कष्ट होते हैं। शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट होने पर इन रोगों में कमी हो जाती है और मनुष्य कितनी ही परेशानियों से बच जाता है।

अष्टमगत राहु फल—जिस वर्ष राहु आठवें स्थान में एकाकी या पाप-क्रूर शत्रु ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो, तो मनुष्य को वर्ष के अधिकतर मासों में नजला, जुकाम, अतिसार, विसूचिका, कफ, स्वप्नदोष, वायु-रोग में पेड़ू, उदर, कमर आदि में पीड़ा, ज्वर, गुप्तेन्द्रियों में दर्द आदि होकर अत्यधिक कष्ट होता है। शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त होने पर रोगों के अत्यधिक वेग में कुछ कमी आकर कुछ सन्तोष मिलता है।

नवमगत राहु फल—जिस वर्ष राहु नवम घर में एकाकी या पाप, क्रूर या शत्रु की राशि में हो, तो मनुष्य वाहन तथा पशुओं से पीड़ा पाता है, बन्धु-कलह, भाग्योदय में देर तथा धर्म-कर्म में भी देरी होती है। किन्तु शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त होने पर शुभ तीर्थयात्रा या देशाटन, धर्म, पुण्य के शुभ कर्म, भाग्योदय तथा राज्य से लाभ, धन-धान्य की प्राप्ति, पिता से अनबन होती है।

दशमगत राहु फल—जिस वर्ष राहु दशवें भाव में नीच का, पाप, क्रूर, शत्रु ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो, तो मनुष्य को पशुओं से पीड़ा तथा मानहानि

होती है। उच्च स्वगृही तथा शुभ ग्रह से दृष्ट या युक्त होने पर मनुष्य को मुकदमे में जीत, राज्य से लाभ, पदोन्नति, अनेक मंगल कार्यों के साथ-साथ यशकीर्ति, लक्ष्मी, वाहन तथा व्यापर में लाभ होता है और प्रतिष्ठा द्वारा सुख मिलता है।

एकादशगत राहु फल—जिस वर्ष राहु ग्यारहवें स्थान में नीच, पाप, क्रूर, शत्रु ग्रहों से दृष्ट या शत्रु राशि पर हो, तो मनुष्य के पुत्रों को कष्ट, विद्या की हानि करता है और यदि राहु उच्च, स्वगृह तथा शुभ ग्रहों से दृष्ट या युक्त हो, तो मनुष्य को काष्ठादि, जंगलात, फर्नीचर, घास-फूस व्यापार से विशेष लाभ होता है। भूमि, पशु, विद्या, स्वर्ण, धन-धान्य की राज्य से प्राप्ति होती है। मातृ-सुख तथा यात्रा में सुलाभ होता है।

द्वादशगत राहु फल—जिस वर्ष राहु बारहवें भाव में नीच, क्रूर, शत्रु ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो या शत्रु की राशि में हो, तो मनुष्य को वायु, पित्त, कफ तीनों रोगों के साथ चित्त में अशान्ति, मन में सन्ताप, वर्ष भर नजला-जुकाम, सिर-पेट, कुक्षि, आँख-कान में दर्द, स्थान-परिवर्तन, या भ्रष्ट बन्धु-बान्धवों से कलह, मातृ-पक्ष से विवाद, चोर, अग्नि-भय, स्त्री को कष्ट, धन का खर्च होता है, यात्रा अशुभ रहती है। शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट होने पर किसी प्रकार दुखों में न्यूनता अवश्य आ जाती है। फिर भी राहु-प्रभाव प्रबल रहता है। राहु-दशा का आया हुआ रोग बहुत समय तक चलता है।

द्वादश भाव गत केतु शुभाशुभ फल

लग्नगत केतु फल—प्रथम भाव में केतु शरीर-पीड़ा, रोग, नजला तथा अनेक चिन्ताएँ देता है, मन-व्यथित सन्तप्त तथा स्त्री-बच्चों को बीमार करता है।

द्वितीयगत केतु फल—दूसरे भाव में केतु धन-सम्बन्धी चिन्ता कराता है, सिर-आँख-उदर में वायु-विकार से दर्द तथा पैरों में शून्यता करता है, दुःख देता है, कुटुम्ब में कलह करता है।

तृतीयगत केतु फल—तीसरे भाव में केतु स्वास्थ्यसम्बन्धी चिन्ता, भाइयों

को कष्ट, पराक्रम में शिथिलता, उद्योग में विफलता करता है। किन्तु विशेष हानि नहीं करता।

चतुर्थगत केतु फल—चौथे भाव में केतु पेट में दर्द, वायुविकार, माता को कष्ट, राज्यभय, अधिकारियों से अनबन, शारीरिक-मानसिक चिन्ताएँ लगी रहती हैं।

पंचमगत केतु फल—पाँचवें भाव में केतु विद्या की हानि, सन्तान-कष्ट, परीक्षा में अनुत्तीर्णता, धन-धान्य हानि, सत्कर्म की हानि करके विवेकशून्य बनाता है।

षष्ठगत केतु फल—छठे भाव में केतु शत्रुओं का ह्रास, मामा के घर बीमारी, आँख, कान में पीड़ा, अग्नि, चोर, पशु भय करता है।

सप्तमगत केतु फल—सातवें भाव में केतु स्त्री-बच्चों को पीड़ा, अपने उदर में पीड़ा, मन्दाग्नि, रक्त-वीर्य-विकार, मानसिक क्लेश तथा चित्त को उद्विग्न रखता है।

अष्टमगत केतु फल—आठवें भाव में केतु अनेक प्रकार के रोगों को उत्पन्न करता है, बारी के बुखार, क्षय, अग्नि, चोर, भय, चोट आदि लगाकर दुःख देता है।

नवमगत केतु फल—नवें भाव में केतु भाग्य का नाश करता है, उन्नति में बाधक, पराक्रम का ह्रास, उद्योग में विफलता, परीक्षा में अनुत्तीर्णता, धन-हानि करता है।

दशमगत केतु फल—दसवें भाव में केतु राज्यभय, धन-हानि, माता को कष्ट, स्थानपरिवर्तन, वाहन-पशु से घात तथा चोट-भय करता है, द्वेष होता है।

एकादशगत केतु फल—ग्यारहवें भाव में केतु उच्च या स्वगृही होने पर धन का लाभ, विद्या, तान्त्रिक या जादू टोने का विकास, चालाकी सिखाता, धोखा दिलाता है।

द्वादशगत केतु फल—बारहवें भाव में केतु, यात्रा में व्यर्थ खर्च कराता है, आँख-कान में पीड़ा, अनेक रोग, मन में क्लेश, चित्त में ईर्ष्या, असन्तोष तथा शत्रुभय का नाश करता है।

वर्ष-फल के लिए जानने योग्य बातें

जव मुन्था जन्म लग्न से ४, ६, ८ हो तथा पापयुक्त, पाप-दृष्ट हो, तो अपने भाव की हानि करती है जैसे २ में धन, ३ में भाई, पराक्रम तथा उद्योग हानि किन्तु वर्ष में स्वस्वामी शुभ ग्रह से दृष्ट या युक्त हो, तो शुभ फल करती है।

मुन्थेश, वर्ष लग्नेश, अस्तगत हों तथा शनि से दृष्ट हों, तो स्त्री-सन्तान-कष्ट तथा स्वयं को शरीर-पीड़ा, मानसिक वेदना आदि कष्ट होते हैं।

वर्षलग्न, जन्मलग्न, जन्म-राशि से अष्टम हों, तो महारोग से कष्ट होता है और अष्टम स्थान पाप क्रूर ग्रहों से युक्त तथा दृष्ट हो, तो मृत्यु तक हो जाती है।

यदि जन्मपत्र के अष्टम स्थान का ग्रह वर्ष के लग्न में हो, तो भयंकर रोग, मानसिक व्यथा होती है। चन्द्र लग्नेश के नष्टवली होने पर मृत्यु तक हो जाती है।

यदि जन्मेश, वर्षेश पापयुक्त, पाप-दृष्ट, अस्तगत ८ में हों, तो मृत्यु-भय देते हैं।

यदि जन्मेश, वर्षेश, मुन्थेश और मुन्था इनमें से कोई तीन या चारों ४, ६, ८, १२ में पाप, क्रूर ग्रहों से युक्त, दृष्ट हों, तो मृत्यु प्रदान करते हैं। ६, ८, १२, १, ७ स्थानों में चन्द्रमा केवल मंगल से दृष्ट होने पर अग्नि, शस्त्र भय, शनि, राहु, केतु से शत्रु भय, वायु पित्त,-पीड़ा, सूर्य से दरिद्रता,

---

नोट—केतु का फल किसी भी स्थान में विशेष शुभप्रद नहीं होता। दूसरे सभी ग्रहों का फल कहते समय उच्च नीच मित्र शत्रु राशि ग्रहों का विचार करके अपने लक्ष्य का तीव्र दृष्टि से अध्ययन करके वर्षफल के शुभाशुभ फलों को कहना चाहिए, क्योंकि शुभ ग्रह, शुभ स्थानों में शुभ-दृष्ट होने पर उच्च स्वगृही मित्र-राशि में शुभ फल करते है, अन्यथा नहीं। किन्तु पाप-क्रूर ग्रह ३, ६, ११ में शुभ-दृष्ट होने पर शुभ फल करते हैं और शुभ स्थानों में अशुभ फल करते हैं।

अग्नि-भय, शुक्र से जल-भय, बुध से पीलिया-रोग-भय होता है। गुरु से दृष्ट, युक्त होने पर कष्ट-परिहार होता है।

चतुर्थ स्थान अपने सुस्वामी से युक्त वा दृष्ट होने पर और गुरु लग्न या तृतीय में तथा जन्मेश, वर्ष सुख स्थान में, यश-कीर्ति, धन, शान्ति तथा सुख देता है।

पाप ग्रह ३, ६, ११ में, शुभ ग्रह केन्द्र त्रिकोण में सुख, सम्पत्ति, वाहन, यश, प्रतिष्ठा, आरोग्य प्रदान कर अरिष्ट दूर करते हैं।

वर्ष में मुन्थेश, वर्षेश, जन्मेशादि यदि अस्तगत, नीचगत पाप-क्रूर ग्रहों से बलहीन होकर दृष्ट अथवा युक्त हो, तो राज्ययोग भी हीन होकर दुख देता है।

यदि गुरु जन्म में धन भाव को देखें और वर्ष में बलवान् वर्षेश होकर शुभ स्थान में बैठे, तो बिना प्रयास धन की प्राप्ति होती है। जन्म का धनेश गुरु वर्षेश होकर धन भाव में बैठा हो, तो पुरुषार्थ से धन तथा सुख मिलता है।

यदि वर्ष में सहजगत (१०, ११) में मंगल हो या १, ८ में तीसरे बुध शुभ ग्रह से दृष्ट युक्त हो, तो मनुष्य को भ्रातृ-सुख प्राप्त होता है।

यदि वर्षेश गुरु ५, ९, ११ अथवा सूर्य, मंगल बुध या शुक्र में से कोई वर्षेश होकर ५, ११ में शुभ दृष्ट होने पर पुत्र-सुख, पाप-दृष्ट होने पर पुत्रों द्वारा दुख मिलता है।

जन्म पत्र का गुरु जिस राशि का हो वह राशि वर्ष में बलवान् होकर पंचम हो, तो या मंगल, बुध, वर्षेश होकर जन्म की गुरु राशि में पंचम स्थान गत पुत्र-प्राप्ति का सौख्य प्रदान करते हैं।

जिस वर्ष शुक्र सप्तम में मंगल से दृष्ट हो या पंचम में मंगल से दृष्ट हो, तो उस मनुष्य की स्त्री के गर्भ रहता है।

यदि वर्षेश मंगल पापपीड़ित, वक्री होकर छठे भाव में हो, तो रुधिरप्रकोप, रक्तचाप, पित्तादि रोग होते हैं। इसी प्रकार सूर्य-नेत्रादि रोग, शुक्र, वायु, पित्त, कफ, नजला, आँख पीड़ा, पुरुष राशि का षष्ठेश दृष्ट शुक्र और चन्द्रमा कफ श्लेष्मारोग करते हैं।

मुन्था, मुन्थेश, लग्न लग्नेश चारों ही पाप क्रूर ग्रहों से दृष्ट, युक्त या घिरे होने पर मृत्युतुल्य कष्ट देते हैं।

कन्या, मिथुन, तुला का शुक्र छठे घर में कफ, नजला करता, पानी से भय देता है, षष्ठेश, छठे भाव में शुभ ग्रह के होने पर स्त्री की प्राप्ति या मुलाकात कराता है।

जन्म षष्ठेश मंगल वर्ष में छठे हो, तो अशुभ ग्रहों के इत्थशालयोग से अत्यंत बीमार तथा शुभ ग्रहों के योग से अल्प रोग करता है।

यदि वर्षेश शुक्र बली होकर सप्तम भाव में हो, तो स्त्री-सुख, गुरु से दृष्ट होने पर अत्यंत सुख, मंगल से दृष्ट होने पर स्त्री-प्रेम, निर्बल, दग्ध नष्टबली शुक्र सप्तम में रवि दृष्ट हो, तो स्त्री से कष्ट मिलता है। बुध शनि से दृष्ट होने पर जारता होती है।

जन्म लग्नेश वर्ष में सप्तम बलवान् होने पर स्त्री-सुख, जन्म की शुक्र राशि वर्ष सप्तम में हो, तब शुक्र के वर्षेश होने पर स्त्री-लाभ होता है।

जन्म लग्नेश वर्ष लग्न से सप्तम उदित बली होने पर स्त्री-सुख मिलता है। जन्म शुक्र राशि पर यदि वर्षेश हो या वह राशि सप्तम में हो, तो पुरुष का विवाह होता है।

जन्म शुक्रराशि में वर्षेश चंद्र हो या बली मंगल हो, तो स्त्री से सुख उत्सव-कारी होता है या वर्षेश मंगल पर शुक्र की दृष्टि से स्त्रीलाभ अथवा वर्षेश शुक्र पर मंगल की दृष्टि होने पर विवाह या स्त्रीलाभ होता है।

जन्म का सप्तमेश, मुन्थेश, तथा वर्षेश होकर १०, ७ में सभी सुख देता है और चन्द्रमा उच्च तथा स्वगृही मुन्था से सप्तम होने पर विदेश-यात्रा कराता है,शुभ दृष्ट-युक्त होने पर सुख और पाप-दृष्ट-युक्त होने पर कष्ट मिलता है।

वर्षेश गुरु पापयुक्त पाप-दृष्ट २—८ में हो, तो धन-हानि होती है। शनि के सप्तम में होने पर मिथ्या अपवाद या कलंक लगता है।

जन्मेश, वर्षेश चन्द्रमा वर्ष में यदि जन्म की बुध राशि पर पाप-पीड़ित हो, तो विदेशगमन अनिच्छापूर्वक बड़े क्लेश से होता है। १, ५, ९ पर वर्षेश मंगल अष्टम हो, तो शस्त्र-भय, अष्टमेश एवं लग्नेश अष्टम में पाप-क्रूर ग्रहों से युक्त दृष्ट होने पर मृत्यु या मृत्यु-भय देता है।

शनि, सूर्य मंगल तीनों ८, १० में वाहन-भय देते हैं। वर्षेश मंगल सहित अष्टम भाव में तथा चंद्र मंगल-युक्त ६, ८, १२ में मृत्यु-भय देता है।

जन्मेश, वर्षेश पापयुक्त लग्न या अष्टम में मुन्था शनि के साथ होने पर मंगल के शत्रु-दृष्ट होने पर मनुष्य उस वर्ष आत्महत्या करता है।

यदि जन्म का अष्टमेश शनि, वर्ष में ८ में हो तथा लग्नेश से क्रूर दृष्टि का इत्थशाल करता हो, तो उस वर्ष मृत्यु होती है।

यदि वर्षेश मंगल ३, ६ में बलवान् हो और पापयुक्त या दृष्ट न हो, तो यात्रा शुभफलदायक होती है। सभी कार्य सफल हो जाते हैं।

जन्म का गुरु जिस राशि पर हो यदि वर्ष मंगल नवम स्थान में उसी राशि का हो या जन्म का बुध जिस राशि पर हो वर्ष में मंगल उसी राशि में लग्नेश से दृष्ट हो, तो यात्रा, धन-धान्य, सौख्य तथा नौकरी सुख से पूर्ण होती है।

जन्म के सूर्य स्थित राशि की मुन्था वर्ष लग्न या १० में हो, तो राज्य से सुख मिलता है और वर्षेश सूर्य नीच का दशम पाप युक्त या दृष्ट होने पर राज्य-दंड मिलता है।

जन्म का सिंह राशि का सूर्य वर्ष में बली दशम में हो, तो पदोन्नति, राज्य से लाभ और जन्म की मंगल स्थित राशि का वर्ष में चन्द्रमा पदोन्नति तथा तरक्की कराता है।

जन्म की शनि स्थित राशि में वर्ष का मंगल दशम से मुन्था को देखे, तो कुकर्म द्वारा, धन की हानि तथा राज्य-दंड प्राप्त करवाता है।

वर्षेश बुध धन स्थान में शुभ ग्रहों से दृष्ट, युक्त होने पर धन-धान्य से व्यापार में पूर्ण लाभ कराता है। वही बुध मुन्था सहित लग्न में विद्या तथा पुस्तकों से लाभ कराता है।

वर्षेश बुध ६-८-१२ में पाप युक्त या दृष्ट होने पर नीच कर्म कराता है, अस्तगत होने पर विद्या तथा अन्य श्रम व्यर्थ हो जाते हैं।

यदि लग्नेश, वर्षेश पापपीड़ित हों, तो राज्य-भय और बली सप्तम में हो, तो व्यापार, व्यवहार से धन लाभ होता है।

कोई भी ग्रह ग्यारहवें स्थान पर बली होने पर धन देता है। लाभेश लग्नेश का इत्थशाल मनुष्य को यश, कीर्ति, प्रतिष्ठा तथा धन लाभ कराता है।

यदि वर्षेश शनि बली ६-१२ में हो, तो पुराना मकान या पुरानी खरीदी भूमि बनती बसती है, बाग, कुआं, धर्मशालादि तथा हैसियत बनते हैं।

वर्षेश शनि उच्च, स्वक्षेत्री दशम में धन देता है, निरोग करता है। इसी प्रकार ४, ६, १२ का गुरु दशम में होने पर धन-धान्य, स्वास्थ्य देता है वर्षेश सूर्य १,५ का दशम में पदोन्नति धन-लाभ कराता है, वर्षेश मंगल १, ८, १० का दशम में पराक्रम, उद्योग से धन, प्रतिष्ठा देता है। बुध ३, ६ का दशम में, ज्योतिष, वैद्यक, डाक्टरी, चित्रकारी, शिल्प-कलादि से लाभ देता है। वर्षेश चन्द्र २,४ का दशम में राज्य से पदोन्नति, श्वेत वस्तुओं के व्यापार से लाभ देता है।

वर्षेश शनि निर्बल पापाक्रांत होने पर मनुष्य को निराश करता है और स्थान-परिवर्तन कराता है। वर्षेश सूर्य हो, जन्म चन्द्रमा की राशि का वर्ष में शनि हो या जन्म, वर्ष में शनि निर्बल, पापाक्रांत हो, तो सर्वत्र विफलता मिलती है।

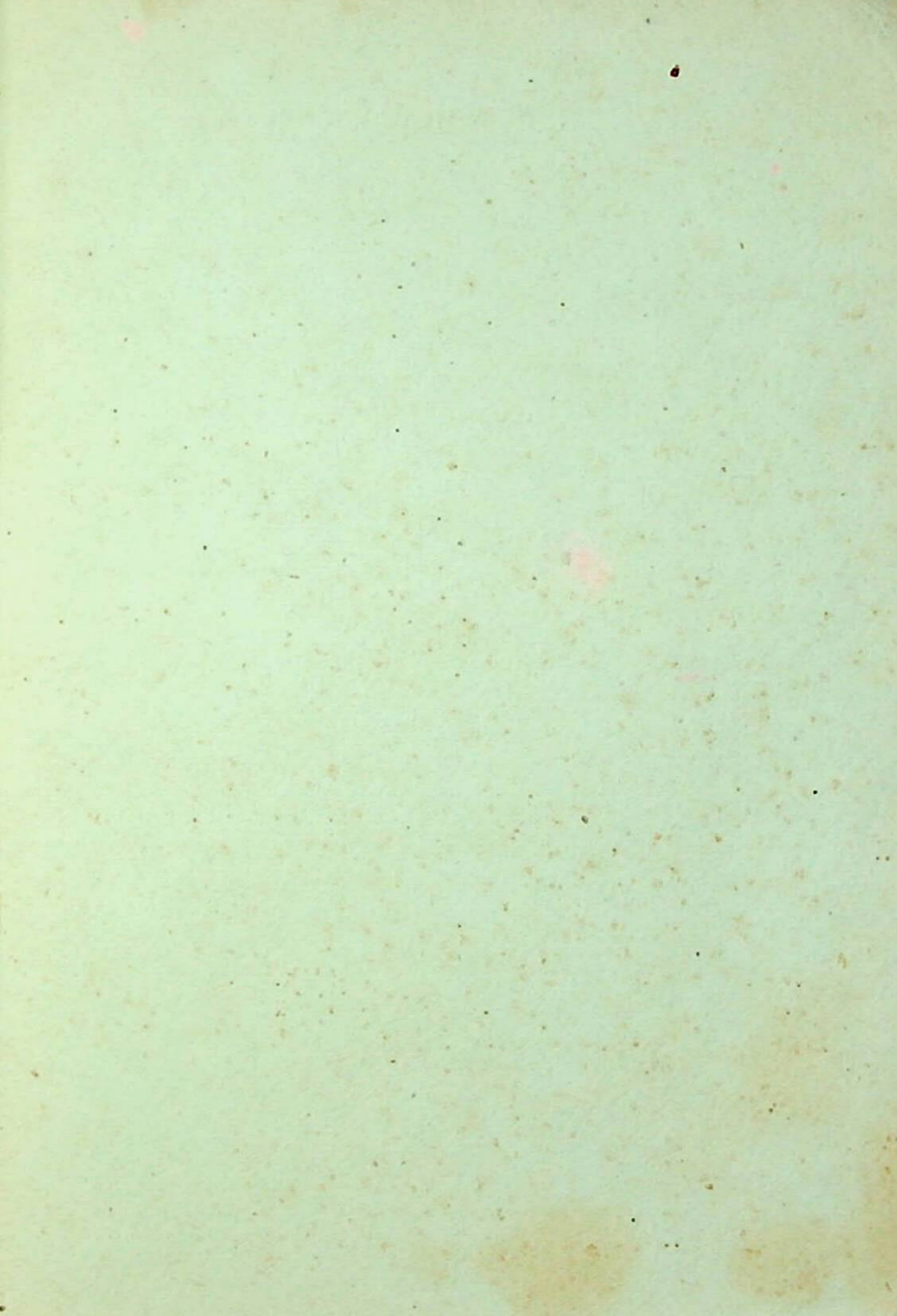
जन्मपत्र में जो ग्रह जिस भाव में जैसा शुभाशुभ फल देनेवाला है, वह ग्रह वर्ष में भी उसी स्थान पर वैसा ही फल प्रदान करता है।

यदि अष्टमेश केन्द्र या त्रिकोण हो, तो उस वर्ष मनुष्य को विष या शस्त्र से घात होता है या ८ माह तक शरीर में रोग, चिन्ता अथवा कारावास होता है।

लग्नाधिनाथो मृत्युभावनाथ एकोदये स्यात्किल वर्षमध्ये। [भृगु भौम]
तदा हि वर्षे मरणं नराणां सुखव्यये चाष्टमगेऽरिभावे॥ [१, ७ लग्न]

जिस स्त्री या पुरुष के वर्षफल में मंगल सप्तम स्थान में होता है तो गर्भपात और तृतीय स्थान में होने से भाई से झगड़ा कराता है।

यदि वर्षफल में सूर्य, राहु नीच के होकर अथवा दूसरे पापी क्रूर ग्रह चतुर्थ स्थान में बैठे हों या कोई ग्रह तृतीय स्थान में हो और दशम स्थान को पूर्ण दृष्टि से देखें, तो नौकरी छूटना या स्थान-परिवर्तन, घर में किसी बूढ़े की मृत्यु या स्वयं का रँडुआ या राँड या विधवा होना प्रदर्शित करता है।



हमारे ज्योतिष के प्रकाशन

अंकविद्या	गोपेश कुमार ओझा :	रु. ४.००
अर्घमार्त्तण्ड	मुकुन्द वल्लभ मिश्र	१२.००
कालचक्र	दीवान रामचन्द्र कपूर	३.००
गणित-प्रवेशिका	प्रो. केदारदत्त जोशी	१.००
चन्द्र हस्तविज्ञान	चन्द्रदत्त पंत	२०.००
ज्योतिष-जगत्	दुर्गादत्त शर्मा	२.५०
ज्योतिष-रहस्य (गणित खण्ड)	गुप्त और अज्ञात	५.००
ज्योतिष में स्वर विज्ञान का महत्त्व	केदारदत्त जोशी	३.००
जातकादेशमार्ग	सं. गोपेश कुमार ओझा	१०.००
दशा-फल-विचार	सं. जगजीवनदास गुप्त	१.५०
प्रश्न-चन्द्र-प्रकाश	चन्द्रदत्त पंत	४.००
फलदीपिका	सं. गोपेश कुमार ओझा	१५.००
फलित मार्तण्ड	मुकुन्द वल्लभ मिश्र	१२.००
रमल-प्रश्नोत्तरी	दीवान रामचन्द्र कपूर	१.५०
राश्यभिधान-कल्पलता	मुकुन्दवल्लभ शास्त्री	५.००
लघुपाराशरी भाष्य	दीवान रामचन्द्र कपूर	८.००
सचित्र ज्योतिष शिक्षा	बी. एल. ठाकुर	
भाग १	(प्रारम्भिक ज्ञान खण्ड)	९.००
भाग २	(गणितखण्ड-प्रथम भाग)	२५.००
,, ,,	(गणितखण्ड-द्वितीय भाग)	१०.००
,, ३	शीघ्र	
सुगम ज्योतिष प्रवेशिका	गोपेश कुमार ओझा	६.५०
हस्त-रेखा-विज्ञान	गोपेश कुमार ओझा	१२.००
त्रिफला (ज्योतिष)	सं. गोपेश कुमार ओझा	८.००

मोतीलाल बनारसीदास

दिल्ली :: पटना :: वाराणसी